चन्दामामा
मई १९९३
RS 4

Ishq mera mazhab hai. Rasna Mera Drink Hai.

Yesterday at my school drama, I was like Amitabh Bachchan as in 'Khuda Gawah.' And everyone clapped and applauded. And when I came home you know what Mummy asked? 'So little ustaad, what do you want to drink?' You know what I said? 'Ishq mera mazhab hai, Rasna Mera Drink Hai.' And then I drank up the whole jug of pyaara Rasna...

I Love You Rasna

More Taste — More Fun

Mudra : EAMR : 6641

Aao Bachhon,
Naachen Gayen
Pyare, Pyare.
Rang Lagayen
ILU
Abhi Scheme
Chalu Hai...
Free!
Luxor Sketch Pen
with 3 pieces
of ILU vests
Lyril
2000
SERIES
Mudra:LI:205:93

मनोज कॉमिक्स का

फ्री लक्की बम्पर ड्रा

निम्न 24 कॉमिक्स पढ़िये और जीतिए

रुपये 3,00,000.00

तीन लाख रुपये के आकर्षक इनाम

- प्रथम (एक) पुरस्कार मारुति कार 800 सी. सी. साधारण
- द्वितीय (एक) पुरस्कार हीरो होण्डा
- तृतीय (एक) पुरस्कार कलर टी.वी. 20"
- चतुर्थ (एक) पुरस्कार दिल्ली से नेपाल की यात्रा के दो रिटर्न एयर टिकट
- पंचम (पचास) पुरस्कार स्पोर्ट्स साइकिल

जादूगर कोबरा	देवता का प्याला	विनाशदूत करकेंटा	अजगर दी ग्रेट	आंख से टपका खून	आकाश का जादूगर	शैतान का टोप	इच्छाध... राम...
फिर आया ड्राक्युला	यम की तलवार	ड्राक्युला का प्रेतजाल	कुबड़ा शैतान	मुर्दा नं. 402	कंकाला जादूगरनी	हम शैतान हैं	कब्रिस्त... की घ...
...कालदेव और गजालू का चक्रव्यूह	विकालदेव और काली खोपड़ी	विकालदेव और पिशाचराज	चार सिर शैतान के	खूनी दानव की वापसी	ड्राक्युला आया मौत लाया	हवलदार बहादुर और नौ अजूबे	हवलदार ब... और साठ ल... का बक...

आवश्यक नोट

उपरोक्त चौबीस कॉमिक्स की बैक पर "फ्री लक्की ड्रा कूपन" छपा है। जब आप चौबीस कॉमिक्स पढ़ लें तो चौबीस कूपन एक साथ इकट्ठे करके भेजें। उन चौबीस कूपनों को एक साथ ड्रा में शामिल करके ड्रा निकाला जाएगा। कृपया अलग-अलग कूपन न भेजें।

इनाम कैसे प्राप्त करें

1. उपरोक्त चौबीस कॉमिक्स के टाइटल की बैक पर लक्की ड्रा कूपन छापा गया है। इन चौबीस कॉमिक्स के कूपन काटकर व उनकी बैक पर साफ-साफ शब्दों में अपना नाम व पूरा पता लिखकर भेजें।
2. आपके चौबीस लक्की ड्रा कूपन हम तक 30 जुलाई 1993 तक अवश्य पहुंच जाने चाहिए।
3. ड्रा 15 अगस्त 1993 को निकाला जाएगा।
4. 30 जुलाई के बाद प्राप्त होने वाले कूपनों को ड्रा में शामिल नहीं किया जाएगा।
5. चौबीस कूपन एक साथ भेजने वालों को ही इस लक्की ड्रा में शामिल किया जाएगा।
6. लक्की ड्रा के विजेताओं को उनके पुरस्कार 30 सितम्बर 1993 तक भेज दिये जायेंगे।
7. लक्की ड्रा के कूपन "मनोज पॉकेट बुक्स" 5 17 बी, रूपनगर, दिल्ली 110007 के पते पर भेजें।
8. अपने लक्की ड्रा कूपन साधारण डाक द्वारा ही भेजें।
9. मनोज पॉकेट बुक्स के कर्मचारी अथवा उनके परिवार के सदस्यों को छोड़कर, सभी भारतीय निवासी इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं।
10. प्रथम चार विजेताओं के नाम व फोटो अक्टूबर माह में प्रकाशित राम-रहीम के नये कॉमिक्स 'शेष नाग का खजाना' में प्रकाशित किये जायेंगे और पाँचवें पुरस्कार के पचास विजेताओं के नाम भी इसी कॉमिक्स में छापे जायेंगे।

चन्दामामा

मई १९९३

★

अगले पृष्ठों पर

★

एक प्रति : ४ रुपये

वार्षिक चन्दा : ४८ रुपये

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

शिष्ट शिक्षा भी चाहिए

कुछ महीने पहले, एक दिन फ्रांस के स्कूली बच्चे, जिनकी संख्या लाखों में थी, अपने बस्तों में कक्षा में पढ़ायी जाने वाली पुस्तकें ही नहीं ले गये, बल्कि एक निश्चित मात्रा में चावल भी ले गये । सारा चावल इकट्ठा किया गया तो यह मात्रा ४,३०० टन हो गयी । चावल की यह मात्रा तथा उस दिन इकट्ठा किया गया धन सोमालिया के भूख से बेहाल बच्चों के लिए था ।

जैसा कि हम सब जानते हैं, अफ्रीका के इस राष्ट्र में आज से लगभग एक वर्ष पहले एक दुःखांत घटना घटी थी, क्योंकि वहां के ४ विभिन्न छापामार गुटों के बीच जमकर युद्ध छिड़ गया था । इस युद्ध में न केवल हजारों लोगों की मृत्यु हुई, बल्कि इससे भी ज्यादा लोग बेघर हो गये और उन्हें अपना देश छोड़कर पास के देश इथोपिया में शरण लेनी पड़ी । जो पीछे बचे, उनके लिए भुखमरी और धीमी मौत के अलावा और कुछ नहीं था । ऐसे अवसर पर विश्व के कई देशों ने आगे बढ़कर भूख से बेहाल इन लाखों लोगों की मदद करनी चाही । संयुक्त राष्ट्र ने, आपस में लड़ रहे गुटों के बीच जहां शांति वार्ता की शुरुआत करानी चाही, संयुक्त राष्ट्र बाल कोष ने सोमाली बच्चों के लिए १०,०००-टन चावल इकट्ठा करने की ठान ली । उत्तर में फ्रांस के बच्चों ने बड़ी तत्परता दिखायी । इस तत्परता को देखकर वहां के मानव कल्याण मंत्री बर्नार्ड उष्नर ने टिप्पणी करते हुए कहा कि यह 'शिष्ट शिक्षा' का एक बढ़िया उदाहरण है । इससे बच्चे बात करने के साथ-साथ काम भी करके दिखाते हैं और सामूहिक जिम्मेदारी उठाने को भी तैयार रहते हैं ।'

हमारे अपने देश में ऐसी क्षमता दिखाने के अवसर अक्सर आते ही रहते हैं । इसलिए हमारे देश के बच्चे भी फ्रांस के बच्चों की तरह कुछ करके दिखा सकते हैं । लेकिन सवाल यह है कि क्या उन्हें उनके स्कूलों में ऐसी शिक्षा दी जाती है? क्या उनके माता-पिता इस दिशा में कोई योग देते हैं? क्या वे अपनी प्रेरणा से संकट में पड़े अपने भाई बहनों की मदद करते हैं?

कुछ ही समय बाद बच्चों को गरमी की छुट्टियां हो जायेंगी । हम आशा करते हैं कि यह विचार उनके लिए प्रेरणादायक होगा और वे अपने दिलों में उन सब लोगों की मदद करने की ठान लेंगे जिन्हें मदद की जरूरत है । 'काम और बात' उनका गुरुमंत्र होगा ।

वर्ष : ४५ | मई १९९३ | अंक : ९

एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

फोर्ट कॉमिक्स

स्वस्थ मनोरंजन के लिए

मई के सैट में पढ़िये

साथ में जीतिए लक्की ड्रा में

मुफ्त

100 कैमरे

फ्री

साथ में

कैसेट
जिसमें है
कॉमिक्स स्टोरी
नरमुण्डों की खेती
(जंगारु)

प्रकाशक बुक फोर्ट 106-ई, प्रथम मंजिल, कमला नगर, दिल्ली-7
दूरभाष : 2923955, 2916804, 2910805, 2918117, 3715183, 3723771.
टैलेक्स : 031-61028 · फैक्स : 0091-11-2923955 · वाइस मेल नं० : 3715183, 3723771. · तार : सीरीफ्लडकोस

कनाडा में संघर्ष

कनाडा से बाहर तो अंगरेज़ और फ्रांसीसी आपास में अच्छे दोस्त हैं, लेकिन कनाडा में वे पिछले २०० वर्षों से आपस में भिड़ते आये हैं। हाल ही में वहां यह जानने के लिए मतगणना की गयी कि क्या कनाडा तथा देश के एकीकरण को लेकर इंगलैंड तथा फ्रांस के बीच चल रहे राजनीतिक विवाद को खत्म करने के लिए संविधान में संशोधन किये जायें।

मतगणना में एक ही प्रश्न था जिसका "हां" या "न" में उत्तर देना था। दस प्रांतों ने स्पष्ट "न" कहा और तीन ने "हां" कहा।

जैसा कि हम जानते हैं, कनाडा आज से लगभग ५०० वर्ष पहले अस्तित्व में आया था। यह १४९७ की बात है जब एक अंग्रेज खोजी, जान कैबेंट, न्यू फाउंडलैंड तथा नोवा स्कोशिया के तट पर पहुंचा। जल्दी ही इंगलैंड ने इन क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य जमा लिया। अगले ४०-५० वर्षों में, फ्रांसीसी खोजी जेकुअस कार्टियस आज के क्यूबैक के दक्षिण के एक गांव में पहुंचा, और वहां बसे रेड इंडियन लोगों को उसने अपनी बस्ती का "कैनेथा" कहकर उल्लेख करते सुना। विश्वास किया जाता है कि बाद के वर्षों में ह्यूरोन भाषा के इस शब्द से ही 'कनाडा' नाम बना होगा। इस बीच उस समय की फ्रांसीसी सरकार ने इस स्थल को अपना प्रांत घोषित कर दिया और इसका नाम "न्यू फ्रांस" रखा गया।

१७ वीं शताब्दी में इंगलैंड और फ्रांस के बीच खुल्लमखुल्ला संघर्ष शुरू हो गया। १७१३ में हुई यूट्रेक्ट की संधि के अंतर्गत इंगलैंड को कुछ और इलाके मिले। १७६९ में ७ वर्ष के युद्ध के बाद पेरिस की संधि के अंतर्गत कनाडा ब्रिटेन को मिल गया जिसने अगले १०० वर्षों में क्यूबैक, ओंटारियो, नोवा स्कोशिया तथा न्यू ब्रूंसविक के परिसंघ की स्थापना की। होते-होते मैनीटोबा, ब्रिटिश कोलंबिया, अल्बर्टा तथा सस्काचेविन भी इस परिसंघ में मिल गये।

१९३१ में वैस्ट मिनिस्टिर कानून के अंतर्गत इस विशाल देश को ब्रिटिश राष्ट्रकुल में

स्वाधीन राज्य का दर्जा दिया गया। जैसा कि तुम सोच ही सकते हो, क्यूबैक जैसे कुछ प्रांतों में ज्यादा संख्या फ्रांसीसी भाषा बोलने वालों की है, और वे अपनी भाषा तथा संस्कृति को सुरक्षित रखना चाहते हैं। परिणाम स्वरूप अलगाववाद का दोनों तरफ से दबाव पड़ता रहता है, और यह आये दिन की समस्या बन गया है।

पिछले बर्षों से इसी समस्या को लेकर बड़ी धुआंधार बहसें चलती रही हैं। इनका उद्देश्य अलगाववादी भावनाओं को ठंडा करना है, विशेषकर क्यूबैक में। प्रधानमंत्री ब्रायन मल्रोनी तथा १० प्रांतों के मुख्यमंत्रियों ने सुधारों के एक ऐसे प्रस्ताव की भी बात की है जिसमें क्यूबैक को विशेष दर्जा दिये जाने का उल्लेख है। इसके अलावा सेनैट के सदस्यों को नामज़द करने के बजाय निर्वाचित करने और वहां की मूल निवासी, रेड इंडियन तथा एस्कीमो जातियों के लिए स्वशासन देने की भी बात है। २८ अगस्त १९९२ में एक आपसी समझौता हुआ।

मतगणना में केवल एक ही प्रश्न पूछा गया है : "क्या आप २८ अगस्त को हुए समझौते के आधार पर संविधान में संशोधन चाहते हैं?" क्यूबैक ने साफ कहा "नहीं", क्योंकि इस प्रस्ताव से क्यूबैक को 'स्वाधीन' दर्जा मिलता। कनाडा के सबसे ज़्यादा जनसंख्या वाले ओंटारियो ने इस प्रस्ताव को रद्द कर दिया। नोवा स्कोशिया मैनीटोबा, सस्कोचेवन, अल्वर्टा और ब्रिटिश कोलंबिया में भी इस प्रश्न को मुहं की खानी पड़ी। केवल तीन प्रांतों ने इस का समर्थन किया। वे थे न्यू फाउंडलैंड, न्यू ब्रूंसविक तथा प्रिंस एडवर्ड आइलैंड। संविधान में संशोधन करने के लिए संघीय संसद तथा दसों प्रांतों की संविधान सभाओं की सहमति अपेक्षित है। इस प्रस्ताव के रद्द हो जाने के परिणाम स्वरूप कनाडा के प्रधानमंत्री मल्रोनी को इस्तीफा देना पड़ा। मल्रोनी वैसे भी कनाडा के युद्धोत्तर काल के बहुत ही अलोकप्रिय नेता रहे हैं।

आलसी भूत

पार्वतीपुर में परमेश्वर नाम का एक व्यक्ति रहता था। वह बड़ा आलसी था। बचपन में ही उसकी मां चल बसी थी। इसलिए उसके पिता ने ही उसे बड़े लाड़-प्यार से पाल-पोस कर बड़ा किया था।

परमेश्वर अब पच्चीस वर्ष का था, लेकिन वह यहां की चीज़ वहां उठाकर नहीं रखता था। उसके आलसीपन की कोई सीमा न थी। उसका पिता सुबह उठता, भैंस को दोहता, चार-पांच घरों में दूध पहुंचाता, लौटकर रसोई बनाता और फिर खेतों की ओर चल पड़ता। परमेश्वर की नींद उसके बाद ही कहीं टूटती। नींद टूटने पर वह खाना खाता और शाम तक गांव में इधर-उधर घूमते हुए दोस्तों से समय गुजार देता।

परमेश्वर के निकम्मेपन से गांव के सभी लोग अच्छी तरह से परिचित थे। इसलिए किसी ने भी उसे अपना दामाद बनाने की नहीं सोची। आखिर, किसी तरह दूर के एक गांव की लड़की नागमणि से उसका विवाह हुआ। इसके बाद नागमणि को पति के स्वभाव का पता चल गया।

नागमणि को ससुराल में आये किसी तरह एक महीना बीत चला था। तब उसने एक दिन अपने पति से कहा, "देखो जी, आप के पिताजी साठ साल पार कर चुकने के बावजूद कड़ी मेहनत कर रहे हैं। आप उनकी मदद क्यों नहीं करते?"

परमेश्वर गुस्से में बोला, "वाह! आज तुम यह कह रही हो कि मैं अपने बाप की मदद करूं। कल कहोगी कि मैं रसोईघर में तुम्हारा हाथ बंटाऊं। यह सब मेरे बस का नहीं।"

पत्नी पति से ऐसा बेतुका उत्तर पाकर चुप हो गयी। इसी तरह डेढ़ वर्ष बीत

कामेश्वर शर्मा

गया। इस बीच उनके एक बेटा हुआ। नागमणि नन्हें शिशु को भी संभालती, घर का काम-काज भी करती।

एक दिन धूप बहुत तेज़ थी। नागमणि अपने नन्हें बेटे को अपने पति को सौंप कर खेत में काम देखने के लिए चल दी। शाम को जब वह लौटी तो उसने देखा कि उसका बच्चा पुराने कुएं की ओर रेंग रहा है। उस कुएं पर जगत भी नहीं थी। परमेश्वर पास ही एक तिपाई पर बैठा हुआ था और बिलकुल निश्चिंत होकर बच्चे को देख रहा था।

नागमणि ने लपककर बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया, फिर वह गुस्से से भरकर बोली, "अगर मुझे एक पल की भी देर हो जाती तो बच्चा कुएं में गिर जाता। क्या आपको इस सबसे कुछ लेना-देना नहीं?"

परमेश्वर बोला, "तुम आ रही हो। इसीलिए मैं चुपचाप बैठा रहा।"

"छी। ऐसी चाकरी अगर मैं कहीं और भी करती, तब भी मेरा और मेरे बेटे का आराम से पेट भरता रहता। तुम्हारे आलसीपन की हद है। अब मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। अब मैं यहां एक पल भी नहीं रहूंगी।" और यह कहकर नागमणि बेटे को लेकर मायके को गयी।

परमेश्वर उसी तरह तिपाई पर बैठा रहा। बैठे-बैठे ऊंघता रहा। फिर एकाएक उसकी आंख खुली और उसने देखा कि घर के चबूतरे पर एक भूत बैठा है।

भूत को देखकर परमेश्वर ज़रा भी नहीं ठिठका, बोला, "तुम तो रात के इस वक्त ईश्वर के रूप में यहां आये हो। पहले वह

खाट उठाओ और उसे यहां डालो । फिर बताओ कि यहां कैसे आये हो?"

"मैं भी तुम्हारी तरह आलसी हूं । तुम्हें देखते ही मैं समझ गया था कि तुम एक आलसी आदमी हो । मुझे तुमसे कुछ मदद चाहिए ।"

"बताओ, मुझ से क्या चाहते हो?" परमेश्वर जंभाई लेते हुए बोला ।

"एक तसला और एक कुदाल उठाओ और मेरे साथ चलो ।" भूत ने कहा ।

"तसला और कुदाल तुम्हें ही उठाने होंगे ।" परमेश्वर भूत से बोला और फिर उसके साथ-साथ चल पड़ा ।

"अच्छा, अब मैं तुम्हें बताता हूं कि मैं भूत कैसे बना । तुम मेरी कहानी ध्यान से सुनो ।" भूत ने कहा ।

"अच्छा, तो सुनाओ ।" परमेश्वर ने अपने सर को बिना हिलाये उत्तर दिय ।

भूत अपनी कहानी सुनाने लगा–

"जब मैं ज़िंदा था तो मेरा नाम सोमेश्वर था । मैं घर का बड़ा बेटा था । मुझ पर कोई ज़िम्मेदारी न थी । मैं खा पीकर यों ही पड़ा रहता और अपना समय बिता देता । मेरे तीन दोस्त थे । उन में से एक महापापी था । दुनिया का ऐसा कोई कुकर्म नहीं था जो उसने न किया हो । दूसरे में भी दुर्गुण ही दुर्गुण भरे हुए थे । तीसरा भी उन दोनों से किसी तरह कम न था । उसमें भी हर तरह की बुरी आदत थी । मैं उन्हीं के साथ आवारागर्दी करते हुए अपना समय बिता रहा था । लेकिन हां, उनके दुर्गुणों का मुझ पर असर नहीं पड़ा ।

"मेरी एक ही बहन थी । उसकी शादी के लिए मेरे पिता ने पड़ोस के गांव में अपना खेत बेच दिया । खेत बेचने से जो पैसा मिला, उसे लेकर वह रात के समय अपने गांव को लौट रहा था ।उसके पीछे-पीछे ही कुछ व्यक्ति चले आये । मेरे पिता को संदेह हुआ कि ज़रूर वे चोर ही होंगे । इसलिए उसने उस धन को बरगद के एक पेड़ के पास छिपा दिया, और खुद वह गांव की ओर बढ़ने लगा । लेकिन उसके गांव तक पहुंचते-पहुंचते उन व्यक्तियों ने उसे आ घेरा और उसके पास धन न मिलने के कारण उसे मार-पीटकर वहां से चले गये ।

"मेरे पिता को उस मारपीट की वजह से काफी चोट आयी । इसलिए घर लौटकर उसने खाट पकड़ ली और दो चार दिनों में ही चल बसा । लेकिन इससे पहले उसने मुझे अपने पास बुलाया और मुझे बताया कि उसने वह धन कहां छिपाया है । उसने मुझसे यह भी कहा कि मैं उस धन से अपनी बहन का विवाह कर दूं ।

"मैं तो था ही । इसलिए वहां से धन निकालकर लाने में टाल मटोल करता रहा । आखिर, बहन की शादी में जब दो दिन रह गये और मां ने वहां से पैसा लाने के लिए मुझे बार-बार कहा तो मैं कुदाल लेकर रात के समय उस दिशा में निकल पड़ा । दिन में मेरी बातों से मेरे दोस्तों को इस रहस्य का पता चल गया था । इसलिए जब मैं बरगद के पेड़ की ओर चला तो वे भी चुपचाप मेरे पीछे-पीछे उस जगह चले आये । लेकिन काफी देर तक मुझे इस हकीकत का पता नहीं चला ।

"आखिर, मुझे पता चल ही गया कि कोई मेरा पीछा कर रहा है । इसलिए असली बरगद के निकट न जाकर मैं एक दूसरे बरगद के नीचे गया और वहां खुदाई करने लगा । इतने में उन दुष्ट मित्रों ने एक बड़ा सा पत्थर उठाया और मुझ पर दे मारा । पत्थर के लगने से मेरी वहीं मृत्यु हो गयी ।

"उसी समय वहां कहीं से तीन शेर आ गये । जैसे कि विधाता ने ही उन्हें वहां भेजा हो, और उन शेरों ने उन दुष्टों का वहां

अंत कर दिया ।"

भूत की कहानी खत्म हो चुकी थी । कहानी सुना चुकने के बाद उसने कहा, "जब मेरी इस तरह मृत्यु हो गयी तो मेरी बहन की शादी भी वहीं की वहीं रुक गयी । इससे मेरी मां और बहन बड़ी दुखी हुईं और उन्होंने भी अपने प्राण दिये । मेरे तीनों दुष्ट मित्रों की आत्माएं नरक में चली गयीं । मैं प्रेतात्मा बनकर यहीं भटक रहा हूं ।"

चलते-चलते वे अब बरगद तक पहुंच चुके थे । भूत ने परमेश्वर को जहां खोदने के लिए कहा, परमेश्वर ने वहीं खुदाई की । खुदाई करने से उसे कुछ सिक्के मिले । इस पर भूत ने कहा, "आज मैंने तुम्हारी पत्नी को अपने बेटे के साथ इस रास्ते पर रोते हुए जाते देखा था । तुम्हारा बेटा भूख से बिलबिला रहा था और तुम्हारी पत्नी उसे पुचकारते हुए कह रही थी कि उसे यह कष्ट भोगना ही पड़ेगा, क्योंकि वह एक आलसी बाप का बेटा बनकर पैदा हुआ है । वह बहुत लाचार दिखती थी, और फूट-फूटकर रो रही थी । मेरी आंखों में भी आंसू आ गये । तुम यह पैसा लो और उससे कोई छोटा-मोटा व्यापार शुरू करो ताकि तुम्हारा परिवार भूखा न रहे । अब यह आलसीपन छोड़ दो । आलसीपन की वजह मेरी यह हालत हुई ।" फिर वह एक तीतर बन गया और वहां से उड़ गया ।

परमेश्वर ने उन सिक्कों को गौर से देखा । वे पुराने थे और प्रचलन में नहीं थे । इसलिए वे बेकार ही थे । लेकिन वह घर लौट गया और मेहनत में जुट गया । उसने अपनी पत्नी को एक पत्र भेजा जिसमें लिखा कि वह खेत में बहुत व्यस्त रहता है, इसलिए वह बच्चे को लेकर लौट आये । उसने अपनी गलती के लिए दुःख भी प्रकट किया था ।

पति से पत्र पाकर नागमणि बहुत खुश हुई । पति में एकाएक आये परिवर्तन के बारे में सोचते हुए वह हैरान हो रही थी । वह अब बिना देर किये घर लौटने की तैयारी में जुट गयी थी ।

चालाक भिखमंगा

महिमापुरी में एक भिखमांगा एक मंदिर के सामने बैठकर भीख मांगा करता था । उसके पास एक तख्ती थी, जिस पर लिखा था-'अंधा हूं । भीख दो ।'

उस ओर से जो भी व्योक्ति गुज़रता, उस तख्ती को पढ़कर वहां बिछे कपड़े पर कुछ सिक्के डालकर आगे बढ़ जाता ।

एक व्यत्लि ने थोड़ी दूरी से कुछ सिक्के फेंके । वे सिक्के लुढ़ककर कपड़े से परे जा पड़े । इस पर वह भिखमंगा उठा और उसने उन सिक्कों को इक्ट्ठा करके वहां बिधे कपडे पर डाल दिया ।

वह व्यत्ति यह सब देख रहा था । वह समझ गया कि यह भिखमंगा अंधा नहीं है । इससे वह एकाएक बिफर उठा और भिखमंगे को डांट लगाते हुए बोला, "लोगों को धोखा देते तुम्हें शर्म नहीं आती । तुम तो अच्छी तरह देख सकते हो । फिर यह अंधेपन का नाटक क्यों?"

इस पर वह भिखमंगा बेझिझक बोला, "क्षमा कीजिए, महोदय । मैं असल में गूंगा हूं । लेकिन लिखने वाले ने इस तख्ती पर गलती से मुझे 'अंधा' बना दिया है ।"

"ओह, यह बात है! चलो, अब किसी अच्छे पढ़े-लिखे से सही-सही लिखवा लेना, समझे ।" और यह सलाह देकर वह व्यक्ति वहां से चल दिया ।

—महावीर हनुमान प्रसाद
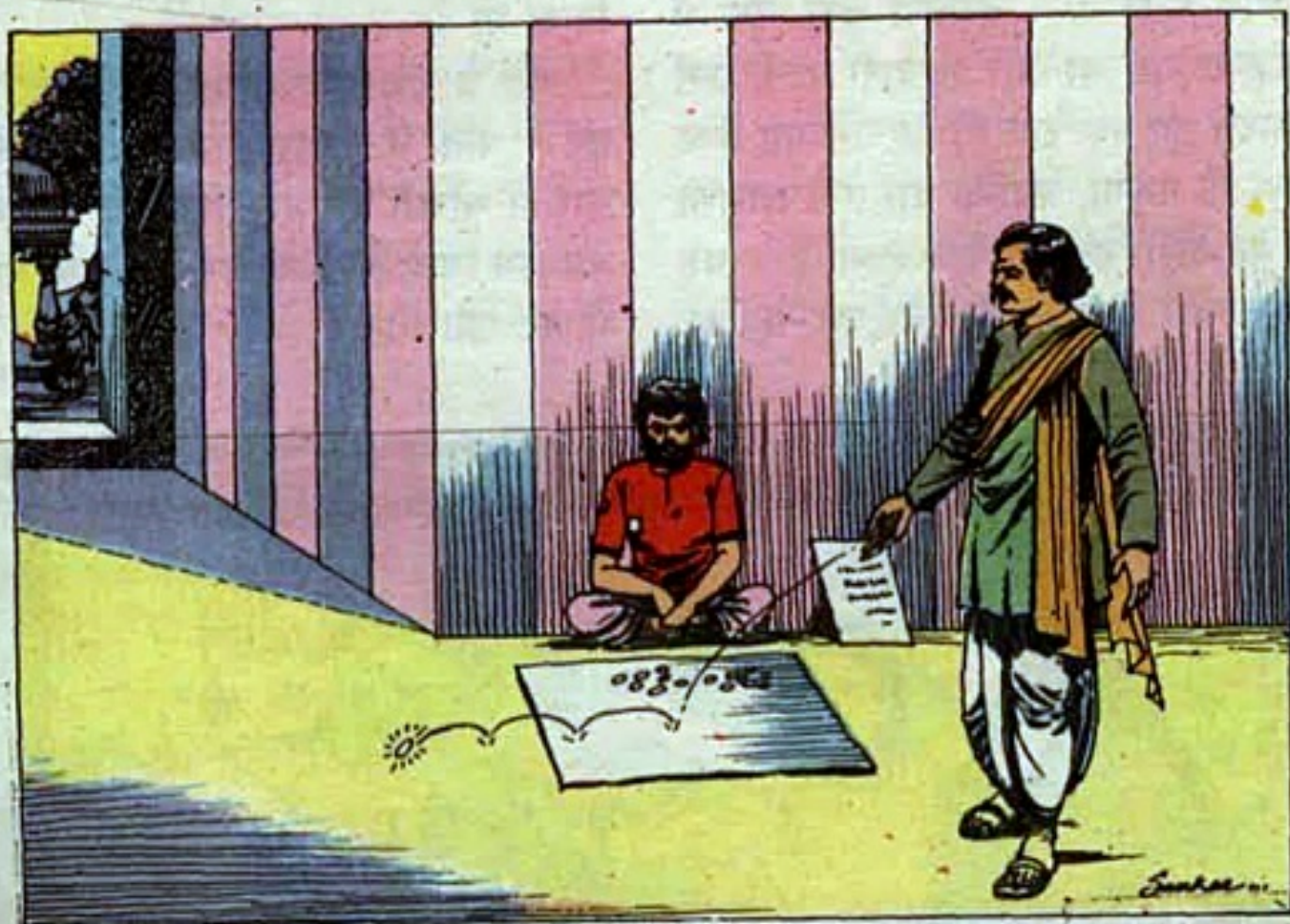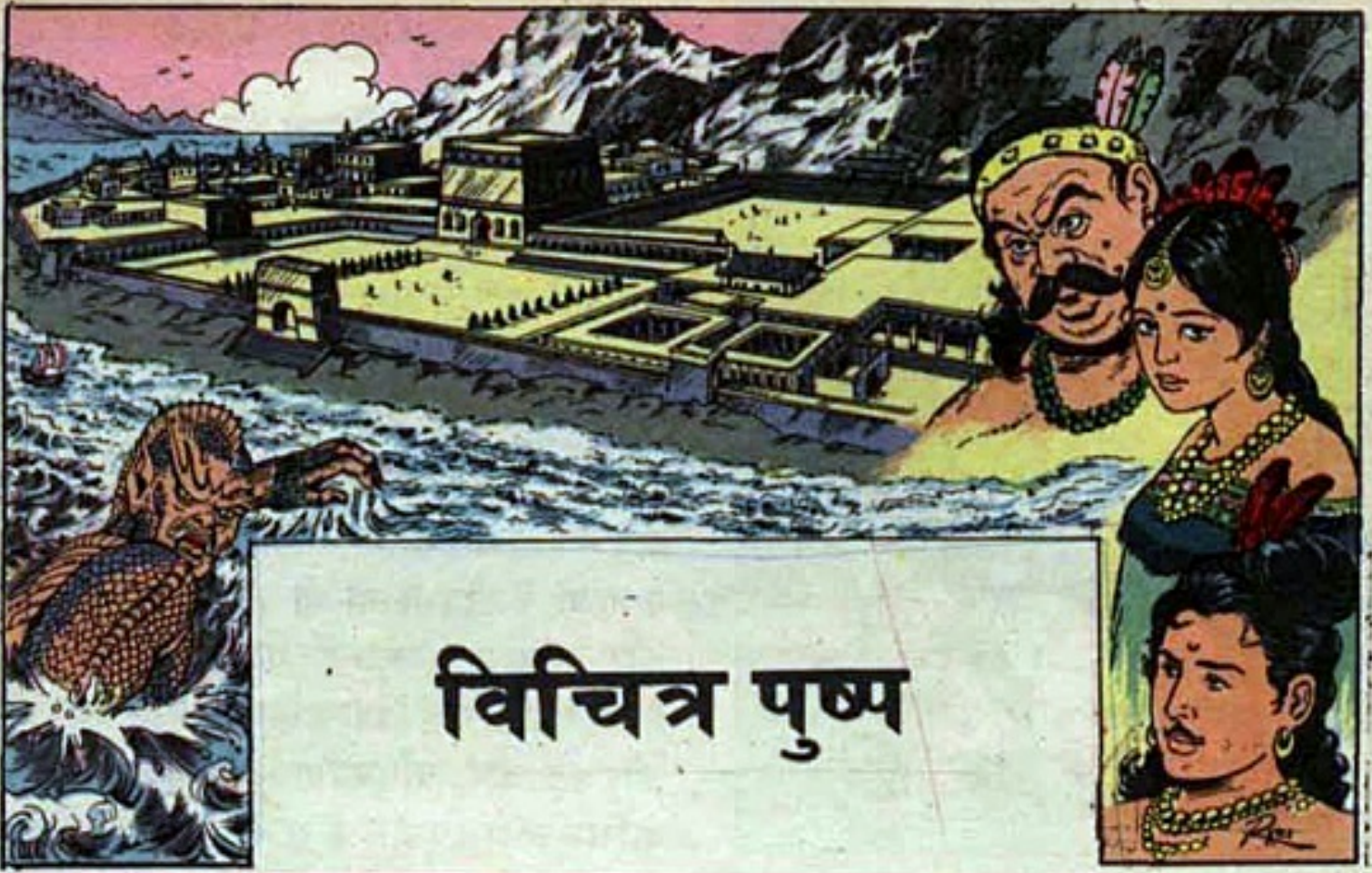
विचित्र पुष्प

हमारे देश की उत्तर-पूर्वी दिशा में माणक्यपुरी नाम का एक राज्य था जहां हर वर्ष बसंत ऋतु के आगमन की खुशी में लगातार एक महीने तक वसंतोत्सव मनाया जाता था ।

यहां वसंत ऋतु जैसे ही शुरू होती, वैसे ही जंगलों और पहाड़ों के बीच स्थित इस राज्य में कई प्राकर के फूलों की छटा देखने को मिलती । रंग-बिरंगे फूलों और हरे-भरे पेड़-पौधों पर कहीं तितलियां उड़ती और कहीं पक्षी चहचहाते । वास्तव में यहां मनाया जाने वाला वसंतोत्सव पिछले सैकड़ों वर्षों से उसी प्रकार वैभवपूर्ण ढंग से मनाया जा रहा था ।

माणक्यपुरी पर राजा प्रतापवर्मा का शासन था । प्रतापवर्मा ने एक आदर्श राजा के रूप में ख्याति पायी थी । उसके पिता पुष्पवर्मा ने प्रतापवर्मा को तभी सिंहासन की ज़िम्मेदारी सौंप दी थी जब वह अभी कमउम्र ही था । इससे पिता के मन को तो खुशी मिली ही, प्रजा में भी धीरे-धीरे सुख-शांति की भावना घर करती गयी । हर कोई राजा प्रतापवर्मा की कुशता की प्रशंसा करता ।

राजा प्रतापवर्मा ने एक कुशल शासक के रूप में कीर्ति तो पायी थी, साथ ही उसने पड़ोसी राज्यों से भी मधुर-संबंध स्थापित किये । इससे प्रजा के मन में किसी राज्य से युद्ध होने का भय भी जाता रहा ।

जब चारों ओर शांति और सुरक्षा की भावना व्याप रही हो, तब लोगों के मन में

कई प्रकार के मनोरंजनों का भी विचार उठने लगता है। इसीलिए इस राज्य में हर वर्ष बड़ी धूमधाम से वसंतोत्सव मनाया जाता था जिसमें पुरुष, स्त्री और बच्चे, सभी पूरे उत्साह से भाग लेते थे।

वसंतोत्सव मनाने का वह समय भी हर प्रकार से उपयुक्त माना जाता था। फसल की कटाई होकर घर में आना, चारों ओर प्रकृति में नयी छटा छा जाना आदि से जनता में आनंद की लहर दौड़ती रहती थी और ऐसे सुखद समय में वसंत ऋतु का आयोजन किया जाता था। एक प्रकार से वसंत ऋतु का उद्देश्य जनता के मन को भरपूर मनोरंजन देना ही होता था। और जनता की हर रुचि के अनुकूल अनेक स्पर्धाओं का तब आयोजन किया जाता था।

प्रतापवर्मा को सिंहासन पर बैठे पच्चीस वर्ष हो गये थे। यह रजत जयंती का समय था। इसलिए इस अवसर पर और भी धूमधाम से उस वर्ष का वसंतोत्सव मनाने का निर्णय हुआ।

हर क्षेत्र में प्रतियोगिता की व्यवस्था भी की गयी। यह प्रतियोगिता क्रीडाओं के ही क्षेत्र में नहीं थी, संगीत, नृत्य एवं अन्य ललित कलाओं के क्षेत्र में भी थी। कवि सम्मेलनों और सहित्य-सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया। कई विद्वत्सभाएं बुलायी गयीं। और तो और, प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए अड़ोस पड़ोस के राज्यों में भी निमंत्रण भेजा गया।

पहले क्रीड़ा प्रतियोगिता हुईक्ष इस प्रतियोगिता में पहाड़ी इलाके का एक युवक हर बार विजयी रहा। इससे उसने हर किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। पहले वह मल्लयुद्ध में विजयी हुआ, फिर वह "कुंजे" नाम के एक खेल में सफल रहा। यह खेल बेंतों से खेला जाता था।

उसी वर्ष एक नया खेल भी शुरू किया गया। पोलो की तरह के इस खेल में एक सूखे नारियल को घोड़े पर सवार होकर हाथ की लकड़ी से इधर-उधर गेंद की तरह लुढ़काया जाना था। इस खेल को 'लकपी' नाम दिया गया। इस में भी पहाड़ों में रहनेवाले उस युवक ने जो अपने दल का अगुवा था, नारियल के गेंद को इतनी ज़ोर
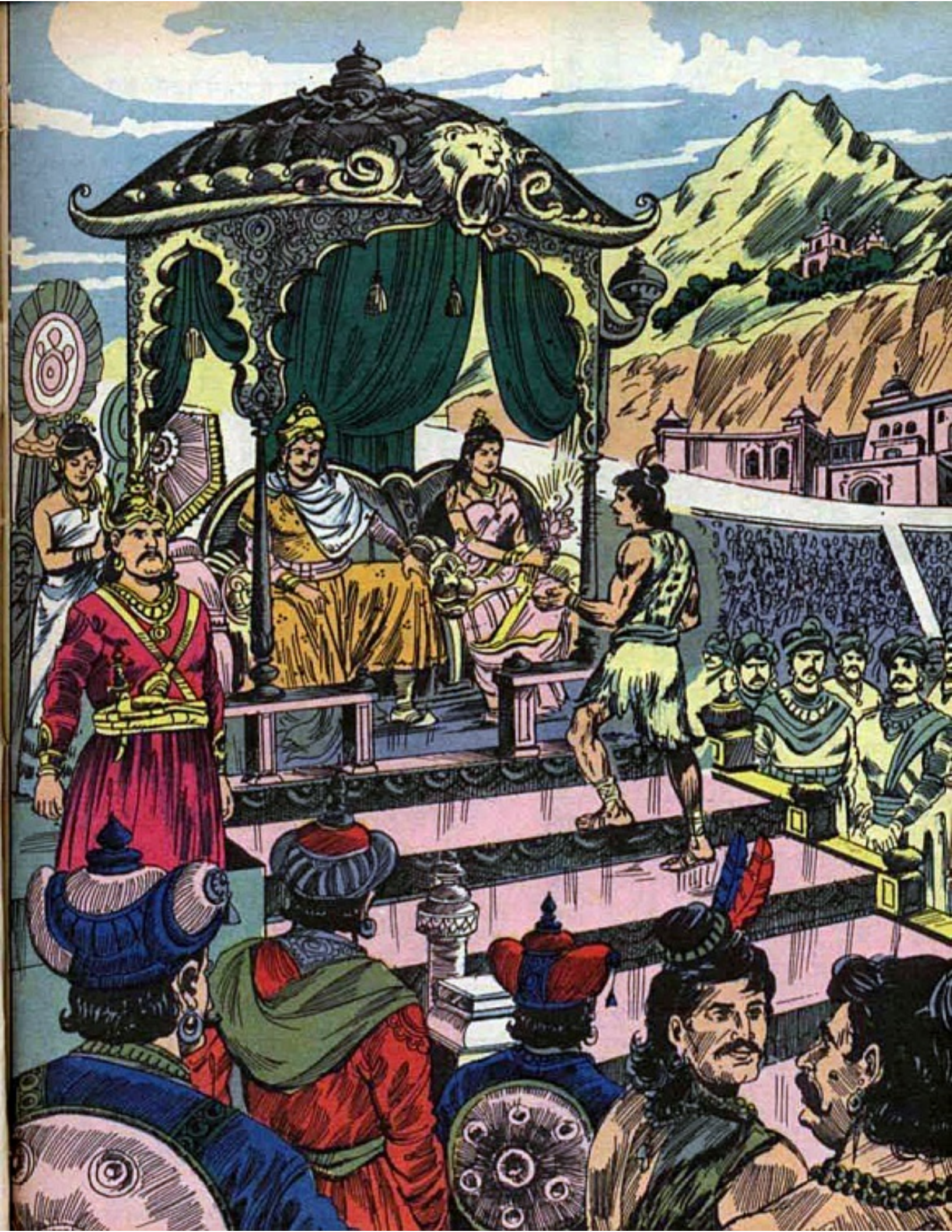
से इधर-उधर फेंका कि चारों ओर हर्ष-ध्वनि होने लगी ।

क्रीड़ा प्रतियोगिता जब खत्म हुई तब पुरस्कार बांटने का समय आया । राजा प्रतापवर्मा ने अपने हाथों से विजेताओं को पुरस्कार बांटे । सबसे अधिक पुरस्कार पाने वाला वह पहाड़ी युवक ही था ।

उसकी ओर प्रेम से देखते हुए राजा ने कहा, "बेटा, तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम उत्तुंग है, प्रभु," युवक के स्वर में विनम्रता थी । फिर उसने अपनी टोली के सदस्यों का परिचय देते हुए कहा, "ये सब मेरे साथी हैं, प्रभु, और मेरे साथ आये हैं । हम श्रृंगमाय पहाड़ों में रहते हैं । हमारे कबीले का नाम उत्तुंग है । राज्य में होनेवाली प्रतियोगिताओं में हमने पहली बार भाग लिया है ।"

उत्तुंग की बात सुनकर राजा प्रतापवर्मा के चेहरे पर खुशी झलक आयी । उसी समय उत्तुंग ने अपने एक साथी के हाथ से पुष्पों का एक गुच्छा लिया और उसे लिये-लिये सीढियां चढ़कर युवरानी के सामने उपस्थित हुआ । फिर उसने युवरानी को नमस्कार किया और पुष्पों के उस गुच्छे को भेंट करते हुए बोला, "युवरानी जी, मैंने सुना है कि आपका फूलों से बड़ा लगाव है । ये हमारे इलाके के फूल हैं । अपनी ही तरह के हैं । आप इन्हें स्वीकार करें ।" और फिर वह सीढ़ियों से नीचे उतर आया ।

युवरानी प्रियंवदा ने फूलों के उस गुच्छे को बड़े प्यार से देखा और फिर अपने पिता को संबोधित करते हुए बोली, "पिताजी, इतने सुंदर फूल मैंने कभी नहीं देखे । इस तरह के फूलों के पौधे हमारे उद्यान में भी होने चाहिए ।"

राजा ने इस की स्वीकृति के रूप में अपना सर हिला दिया ।

थोड़ी देर बाद ही पुरस्कार समारोह समाप्त हुआ । तब राजा ने वहां उपस्थित समुदाय को संबोधित करते हुए कहा, "मेरे प्यारे नागरिको, इस वर्ष हमने वसंत उत्सव काफी धूमधाम से मनाया है । क्रीड़ा प्रतियोगिता विशेष आकर्षण रहा । इसमें भाग लेकर श्रृंगमाय के उत्तुंग ने अपनी टोली के साथ जो कमाल दिखाये, वे अद्वितीय हैं ।

इसीलिए हमने निर्णय लिया है कि भविष्य में इस वर्ष शुरू किये गये नये खेल का नाम हम "लकपी" के बजाय श्रृगमाय प्रांत के नाम पर "मायक्रीड़ा" रखेंगे। यही नहीं, हमारा यह भी निर्णय है कि इसी वर्ष से हमारी सेना में इस क्षेत्र के युवकों को भी भर्ती किया जायेगा। कल वसंतोत्सव का आखिरी दिन है। इसलिए कल भी हर वर्ष की तरह राजप्रासाद के द्वार खुले रहेंगे। आप में से जो भी कोई यथावत् राजप्रासाद में आना चाहे, बेरोकटोक आ सकता है, और राजपरिवार से भेंट कर सकता है। देवी-माता हमारी रक्षा करें।"

राजा की यह घोषणा सुनकर वहां उपस्थित लोगों ने ज़ोर-ज़ोर से राजा प्रतापवर्मा और युवरानी प्रियंवदा की जय-जयकार की। इसके बाद राजा और युवरानी अलग-अलग रथों में सवार होकर राजभवन को लौट गये। राजा के साथ उसका सेनानायक गंभीरसिंह था, और युवरानी के साथ उसकी दो सहेलियां थीं। राजधानी के मुख्य मार्ग से जिस समय रथ महल की ओर बढ़ रहे थे, उस समय मार्ग के दोनों ओर लोग पंक्तिबद्ध खड़े होकर उनका अभिवादन कर रहे थे और उनके प्रति अपनी शुभकामनाएं भी नारों से व्यक्त कर रहे थे।

महल में पहुंचते ही युवरानी ने फूलों के उस गुच्छे को सजाने के लिए कांच का एक बड़ा फूलदान मंगवाया और उसमें उसे

बड़े स्नेह से सजाकर रख दिया। फूलों के उस गुच्छे के कारण युवरानी के कक्ष की सुंदरता में चार चांद लग गये, और युवरानी आनंद से विभोर हो उठी।

अगले दिन सुबह-सुबह ही नगर के चारों ओर से लोग राजमहल की ओर उमड़ने लगे। राजा, युवरानी और राजपरिवार के अन्य लोग महल के ऊपरी तल्ले पर थे और वहीं से वे लोगों का अभिवादन और शुभकामनाएं स्वीकार कर रहे थे।

इतने में युवक और युवतियां एक दूसरे पर रंगों की बौछार करते हुए आनंदमग्न हो नाचने-गाने लगे, और तमाम दिन इसी तरह नाचने गाने में बीत गया।

वसंतोत्सव का यह भाग युवती-युवकों के

जीवन में एक मधुर अनुभूति भर देता था। खुलकर इस तरह मिलने-जुलने और नाचने-गाने में उनके भीतर एक नयी स्फूर्ति भर जाती थी। और तो और, नाम जनता के साथ राजपरिवार का भी यूं मिल बाना और साथ-साथ खुशियां मनाना एक खास बात थी।

शाम हुई तो उत्सव की भीड़ भी कुछ कम हुई। तब राजा ने अपने सेनानायक को बुलाकर पूछा, "कल श्रृगमाय पर्वतीय क्षेत्र से आये उत्तुंग ने युवरानी को जो फूलों का गुच्छा भेंट किया था, क्या तुमने उसे देखा था? प्रियंवदा चाहती है कि उन फूलों के पौधे हमारे उद्यान में भी हों। तुम फौरन दो समर्थ सैनिकों को श्रृगमाय पर्वत पर भेजो और उन्हें वहां से वे पौधे लाने का आदेश दो। वहां उन्हें उत्तुंग भी मिल जायेगा। वे पहले उससे ही मिलें। वह हर प्रकार से उनकी मदद करेगा।"

"जो आज्ञा।" कहकर सेनानायक गंभीर सिंह वहां से हट गया। फिर उसने दो हृष्ट-पुष्ट सैनिकों को बुलवाया और उन्हें युवरानी के कक्ष में रखे फूलों को दिखाते हुए आदेश दिया कि वे श्रृगमाय के इलाके में जाकर उत्तुंग की सहायता से उन फूलों के पौधे लायें।

उन फूलों को देखकर वे सैनिक भी बहुत खुश हुए और बोले, "ये फूल वाकई बहुत सुंदर हैं। इन्हें पहचानना मुश्किल नहीं होगा।" फिर उन्होंने युवरानी को संबोधित करते हुए कहा, "युवरानी जी, हमें केवल आपकी आज्ञा चाहिए। हम इन फूलों के पौधे लेकर जल्दी से जल्दी लौटेंगे।"

श्रृगमाय पर्वतीय क्षेत्र में गये सैनिकों को एक सप्ताह बीत गया था। अभी तक वे लौटे नहीं थे। युवरानी इसके बारे में सोचते हुए काफी व्यग्र हो रही थी। वह हैरान भी थी कि सैनिक अभी तक लौटे क्यों नहीं हैं। लेकिन उत्तुंग द्वारा दिये गये फूल बिलकुल वैसे के वैसे ताज़ा दिखाई दे रहे थे। इससे युवरानी का आश्वस्ति भाव बना हुआ था।

इसी तरह तीन सप्ताह बीत गये। फिर एक दिन वे सैनिक लौट आये। वे अपने साथ वे पौधे नहीं लाये थे जिनके लिए उन्हें

भेजा गया था। वे दूसरी तरह के केवल कुछ फूल ही लाये थे।

बहरहाल, सेनानायक गंभीरसिंह उन दोनों सैनिकों के साथ राजमहल में पहुंचा। वहां राजा और युवरानी ने जब उन्हें देखा तो वे बहुत खुश हुए। गंभीर सिंह ने वे फूल युवरानी को भेंट किये और फिर वह राजा से बोला, "इन्हें श्रृगमाय पर्वतीय क्षेत्र में ये फूल ही मिले, पौधे नहीं।"

राजा ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उन सैनिकों की ओर देखा और फिर उनसे जानना चाहा कि उन्हें वे पौधे क्यों नहीं मिले।

तब एक सैनिक ने कहा, "प्रभु, हम कई प्रकार के कष्ट उठाकर वहां पहुंचे। हम उत्तुंग से भी मिले। उत्तुंग हमें देखकर बहुत खुश हुआ। वह हमें दूर-दूर तक लिवा ले गया। उन पहाड़ों पर इतने ऊंचे पौधे थे कि वे आसमान को छूते थे। उन्हीं पौधों के ऊपर ये फूल लगे थे। ये फूल खूब चमक रहे थे। वहां के लोग इन्हें विद्युत पुष्प कहते हैं। ये सौ वर्षों में एक बार ही खिलते हैं। इसीलिए इन्हें "शताब्दी पुष्प" भी कहा जाता है। फूल लगने के दो वर्ष बाद ही नये पौधे उगने शुरू होते हैं, और जब वे बढ़कर काफी ऊंचे हो जाते हैं, तभी उनमें नये फूल आते हैं। इस समूची प्रक्रिया में सौ वर्ष बीत जाते हैं। यह बात हमें वहां के बुजुर्गों ने बतायी। प्रभु, हम जो फूल लाये हैं, उसके लिए हमें एक पौधे को कटवाना पड़ा। हमें डर था कि हम खाली

हाथ जायेंगे तो युवरानी जी निराश हो जायेंगी।"

उस सैनिक की बात सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर उसने कहा, "चलो, कोई बात नहीं, दो वर्ष बाद जब फिर से नये पौधे उगने शुरू होंगे, तब हमें उन्हें मंगवा कर अपने उद्यान में लगवा लेंगे।"

"यदि इन पौधों पर फूल लगने में सौ वर्ष बीत जायेंगे तो मुझे नये फूल देखने का कभी सौभाग्य नहीं मिलेगा।" युवरानी ने हतोत्साहित होते हुए कहा।

लेकिन राजा ने उन सैनिकों से कहा, "खैर, मैं तुम लोगों का आभारी हूं कि तुमने इतने कष्ट उठाकर ये सब सूचनाएं इकट्ठी की

और ये फूल भी लाये ।"

फिर उसने सेनानायक से कहा, "इनके परिश्रम के लिए उचित पुरस्कार की तुरंत व्यवस्था करो ।"

"जी हुजूर!" कहकर सेनानायक उन दोनों सैनिकों के साथ वहां से चला आया ।

होते-होते फूलों के बारे में यह सूचना चारों ओर फैल गयी । राजगुरु गौरीनाथ के कानों में भी यह सूचना पड़ी । शताब्दी पुष्प नाम सुनते ही वह चौंक पड़े । उन्होंने इसके बारे में कुछ ग्रंथों में पढ़ा था । वह बहुत बड़े विद्वान थे और राजघराने की भलाई चाहते थे । उन्होंने कुछ और ग्रंथों का भी अध्ययन किया और फिर अपने संदेह की पुष्टि पाकर उन्होंने राजा को खबर भिजवायी कि वह कुछ ज़रूरी बात करने के लिए राजमहल में आ रहे हैं ।

राजगुरु के एकाएक आगमन के बारे में सूचना पाकर राजा को हैरानी हुई । वह समझ नहीं पा रहा था कि राजगुरु एकाएक क्यों आना चाह रहे हैं । राजगुरु ने जब राजमहल में प्रवेश किया तो राजा ने आगे बढ़कर उनका सत्कार किया और फिर उन्हें उचित आसन देते हुए पूछा, "आपके इस तरह अचानक आने का कारण...?"

राजा ने अपना वाक्य बीच में ही छोड़ दिया था । राजगुरु ने उत्तर दिया, "एक विशेष सूचना आपको देना चाहता हूं, राजन् ।"

राजगुरु का उत्तर वाकई विस्मयकारी था । राजा उनकी ओर अब बड़ी उत्कंठा से देख रहा था ।

तब राजगुरु ने कहा, "राजन्, मैंने शताब्दी पुष्प के बारे में खबर सुनी है । इस पुष्प के राजमहल में लगने से राजपरिवार और राज्य के अनिष्ट का खतरा है ।"

"अनिष्ट? आप क्या कहते हैं?" राजा ने राजगुरु की ओर ऐसे देखा जैसे कि उसे अपने कानों पर विश्वास न हो रहा हो । (क्रमशः)

महारानी कौन बने?

अपनी धुन का पक्का राजा विक्रम फिर उस पेड़ के पास गया, पेड़ की शाखा से लटकती लाश को उसने नीचे उतारा और उसे अपने कंधे पर डालकर हमेशा की तरह मौन साधे श्मशान पार करने लगा । तब लाश में मौजूद बैताल बोला, "राजन्, कुछ लोग बड़ी लगन और मेहनत से अपना काम साधने की कोशिश करते हैं, लेकिन फिर भी उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होती । वे अपने को बड़े विवेकवान समझते हैं, लेकिन कई अविवेकपूर्ण निर्णय ले लेते हैं । एक प्रकार से वे आत्मप्रवंचना के शिकार होते हैं । उदाहरण के लिए मैं आपको राजा विशालवर्मा के बारे में बताना चाहता हूं जिसने अपने पुत्र के विवाह के विषय में ऐसा ही निर्णय लिया था । आप सावधान होकर सुनें ताकि आपको थकान भी महसूस न हो ।" फिर बैताल कहानी सुनाने लगा ।

वेतालकथा

पुराने जमाने में वैशालिनी पर राजा विशालवर्मा का शासन था। उसकी एक निकट रिश्ते की औरत ने एक बेटी को जन्म दिया और फिर उसकी मृत्यु हो गयी। विशालवर्मा को उस बच्ची के प्रति बड़ा स्नेह था। इसलिए उसने बच्ची के लालन पालन का ज़िम्मा अपने ऊपर ले लिया। राजा चाहता था, वैशाली जब बड़ी हो जाये तो उसका विवाह उसके इकलौते बेटे विजयवर्मा से हो जाये।

वैशाली और विजयवर्मा, दोनों ही अब जवान हो गये थे। विजयवर्मा वैशाली में कोई विशेष रुचि नहीं दिखाता। हो सकता है विजयवर्मा वैशाली से विवाह करने से इनकार ही कर दे। इसलिए एक दिन उसने अपने मन की बात अपने बेटे के सामने रख दी और उससे कहा कि वह वैशाली से विवाह कर ले।

विजयवर्मा थोड़ी देर तक मौन रहा। फिर बोला, "निस्संदेह वैशाली एक आदर्श पत्नी हो सकती है। लेकिन मुझे लगता है कि उसमें भावी महाराजा की योग्य महारानी बनने की क्षमता नहीं है।"

बेटे का उत्तर सुनकर राजा ने कहा, "ओह, इसका अर्थ तो यह हुआ कि आदर्श पत्नी को महारानी बनने के लिए अपने में कोई अतिरिक्त योग्यता पैदा करनी होगी! चलो, मान लिया कि वैशाली में वह योग्यता नहीं है, तब वह योग्यता किसमें है?"

पिता का प्रश्न सुनकर विजयवर्मा बिना सिटपिटाये बोला, "मेरी एक सहपाठी थी, सौमित्रा। वह हमारे सेनापति की पुत्री है। वह बिलकुल उपयुक्त है।"

बेटे के मुंह से ऐसा उत्तर सुनकर विशालवर्मा पूरी तरह झल्ला उठा और उसी झल्लाहट में कहने लगा, "क्या कहा, सौमित्रा? वह किस लिहाज़ से वैशाली से अच्छी है? बातचीत में, सुशीलता में या किसी और कारण?"

विजयवर्मा ने शांत होकर उत्तर दिया, "मुझे क्षमा कीजिए, पिताजी, आप अभी गुस्से में हैं। इसलिए आपको मेरी बात पसंद नहीं आयेगी।"

राजा के लिए अपने बेटे की बात असह्य हो गयी। इसलिए वह वहां से अपने कक्ष

की ओर चल दिया । लेकिन इसके बाद भी दो-तीन बार यह प्रस्ताव विजयवर्मा के सामने रखा गया, और हर बार उसे पहले वाला उत्तर ही मिला ।

अब राजा विशालवर्मा ऊब गया था । इसलिए वह कहे बिना रह न सका, ''लगता तुम्हारा विवाह एक समस्या बन जायेगा ।''

विजयवर्मा समझ गया कि उसने अपने पिता के मन को ज़बरदस्त ठेस पहुंचायी है ।इसलिए बोला, ''पिताजी इस समस्या का समाधान मैंने सोच लिया है । मैं आपको एक कहानी सुनाता हूं । कहानी के अंत में कुछ सवाल पूछूंगा । आपको उन सवालों के उत्तर नहीं देने हैं । आप केवल वैशाली और सौमित्रा को साथ-साथ बैठाकर यह कहानी उन्हें सुना दें, और जो सवाल मैं आपसे पूछूंगा, उन्हें आप उन्हीं से फिर से पूछें । वे जो उत्तर देंगी, उन में आपको अपनी समस्या का समाधान मिल जाएगा ।'' फिर उसने अपने पिता को वह कहानी सुना दी ।

विशालवर्मा लाचार हो गया । उसे अब वह कहानी उन दोनों युवतियों को सुनानी पड़ रही थी ।अगले दिन वह अंतःपुर में गया । वहां वैशाली और सौमित्रा वीणावादन में मग्न थीं । राजा ने पहले उनसे इधर-उधर की बातें कीं, फिर वह उनसे बोला, ''मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं । बड़ी रोचक है । तम दोनों उसे सावधानी

से सुनो ।'' और फिर वह उन्हें वह कहानी सुनाने लगा ।

बहुत पहले की बात है । अवंती राज्य पर शासन करने वाले राजा सिंहकेतु की दो पत्नियां थीं । बड़ी पत्नी का नाम स्वर्णलता था जिसके साथ उसने वंश रीति के अनुसार विवाह किया था । छोटी पत्नी का नाम श्रीलेखा था । उसके साथ उसने स्वयं उसके गुणों और व्यक्तित्व की विशिष्टता के प्रति आकृष्ट होकर विवाह किया था ।

एक बार स्वर्णलता के मन में यह विचार उठा कि राजा श्रीलेखा से अधिक प्रेम करता है । इस विचार से वह काफी दुखी हुई । श्रीलेखा अक्सर पुरुष वेश धारण करके

अपने पति के साथ घूमती रहती थी। वह आखेट और राज-कार्यों में भी पति का बराबर साथ देती थी।

यह सब देखते हुए स्वर्णलता ने निर्णय लिया किये उसे भी पुरुष वेश धारण करके पति के साथ घूमना चाहिए। उसने अपने मन की बात राजा को बता दी।

पत्नी के मुंह से ऐसा निर्णय सुनकर राजा को अचंभा हुआ। उसने कुछ कहना भी चाहा, लेकिन स्वर्णलता ने पति को बोलने का अवसर ही नहीं दिया। कहने लगी, "महाराज, मैंने भी श्रीलेखा की तरह घुड़सवारी सीखी है। मैं तलवार चलाना भी जानती हूं।"

स्वर्णलता की बात सुनकर सिंहकेतु मुस्करा दिया और बोला, "ठीक है, महारानी। जैसा तुम चाहती हो, वैसा ही होगा।"

इस घटना के कुछ दिन बाद ही स्वर्णलता पुरुषवेश में अपने पति के साथ आखेट के लिए निकली। आखेट के लिए उन्हें दूर जंगल में जाना पड़ा। वहां भीलों की कई झोंपड़ियां थीं, लेकिन वे एक दूसरे से अलग-अलग, विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई थीं।

आखेट करते हुए राजा थक गया। वह अपनी पत्नी के साथ पास की एक झोंपड़ी में पहुंचा। झोंपड़ी में उहें एक भील स्त्री मिली। उस स्त्री ने राज-दंपत्ति को खूब आदर दिया और उनके सामने मिट्टी के बर्तनों में कोई नया पदार्थ खाने के लिए परोसकर बोली, "हमारे यहां का यह एक खास पकवान है, प्रभु।" उस समय उसके स्वर में बड़ा संतोष झलक रहा था।

राजा सिंहकेतु ने मिट्टी का एक बर्तन अपनी ओर सरका लिया और उस नये पदार्थ को बड़े चाव से खाने लगा। स्वर्णलता ने भी अपना बर्तन अपने और निकट कर लिया और फिर उस पदार्थ का थोड़ा-सा अंश उसने अपने मुंह में डाला। उस पदार्थ का उसका मुंह में जाना था कि उसे लगा कि उसके पेट में खलबली मच उठी है और उसे कै होने को है। लेकिन राजा उस पदार्थ को बड़े चाव से खाये जा रहा था।

जब उसने अपना बर्तन खाली कर लिया तो वह उस भील स्त्री से बोला, "यह तो

बहुत ही बढ़िया है । अगर तुम्हारे पास थोड़ा जंगली मधु भी हो तो वह भी चखा दो ।"

राजा की मांग सुनकर वह भील स्त्री बहुत खुश हुई । वह दो पात्रों में शहद ले आयी । राजा और रानी, दोनों ने ही उस शहद का पान किया । फिर थोड़ी देर तक वहां विश्राम करने के बाद वे वहां से चल पड़े । उन्हें विदा करने के लिए भील स्त्री काफी दूर तक आयी ।

तभी स्वर्णलता ने अपने पति से कहा, "महाराज, जरा रुकिए । मैं अभी आयी ।" फिर वह उस भील स्त्री के साथ उसकी झोंपड़ी में गयी और उससे जान लिया कि उस पदार्थ को कैसे तैयार किया जाता है ।

अभी एक ही सप्ताह बीता था कि राजा स्वर्णलता के अंतःपुर में गया । रानी ने उसका भरपूर स्वागत किया और उसके सामने एक स्वर्णपात्र में ढेर सारा वही पदार्थ खाने के लिए रख दिया जो उन्होंने झोंपड़ी में खाया था । इसके साथ ही वह बोली, "यह पदार्थ आपको उस दिन बहुत बढ़िया लगा था न?"

लेकिन सिंहकेतु ने उस पदार्थ वाले स्वर्णपात्र को एक ओर सरकाकर रखते हुए अपने गले से मोतियों की माला उतारी और रानी के गले में पहनाते हुए बोला, "मेरे प्रति तुम्हारे मन में यह जो अगाध प्रेम और श्रद्धा है, मैं उसके लिए बहुत खुश हूं । यदि तुम इसी प्रकार सिरीश पुष्प की तरह अंतःपुर में ही रहो तो बहुत अच्छा होगा । क्यों मेरे साथ जंगलों में घूम-घूमकर कष्ट उठाती हो? तुम्हारा इस प्रकार कष्ट उठाना

पत्नियां घुड़सवारी जानती थीं। फिर भी राजा सिंहकेतु केवल श्रीलेखा को ही अपने साथ बाहर ले जाता था और स्वर्णलता को अंतःपुर में ही बांदी के समान रखना चाहता था। इससे साफ पता चलता है कि उसका व्यवहार स्वर्णलता के प्रति ठीक नहीं था।"

अब राजा विशाल वर्मा ने सौमित्रा को संबोधित किया,"तुम्हारा क्या विचार है, बेटी? क्या तुम भी ऐसा ही सोचती हो?"

लेकिन सौमित्रा ने केवल धीरे से मुस्करा दिया और फिर अपना सर हिलाते हुए बोली, "राजा सिंहकेतु का व्यवहार ठीक ही था। इससे उसकी शासन-कुशलता और मानव प्रकृति में पैठ का पता चलता है।"

यह उत्तर पाकर राजा एक क्षण के लिए चौंका। फिर मौन होकर वह कुछ सोचता रहा, और वहां से उठकर चला गया।

इसके एक ही महीने बाद विशालवर्मा ने अपने बेटे का विवाह सेनापति की पुत्री सौमित्रा से बड़ी धूमधाम के साथ कर दिया। और शासन का दायित्व भी अपने बेटे को सौंप दिया।

बैताल ने यह कहानी सुनाकर प्रश्न किया, "राजन, वैशाली के उत्तर की तुलना में सौमित्रा के उत्तर में ऐसी क्या बात थी कि राजा विशालवर्मा उससे संतुष्ट हो गया। फिर समान रूप से सुशील और सुशिक्षित पत्नियों में केवल श्रीलेखा के प्रति ही उसने अधिक आदर क्यों दिखाया? क्या यह

मुझे कतई बर्दाश्त नहीं होता।"

स्वर्णलता समझ नहीं पा रही थी कि उसे अपने पति की बात पर खुश होता चाहिए या दुखी। इसलिए वह मौन रही।

कहानी समाप्त करके राजा विशालवर्मा ने वैशाली और सौमित्रा की ओर देखा और कहा, "मुझे एक संदेह है। राजा सिंहकेतु केव्यवहार से मुझे ऐसा लगता है कि स्वर्णलता और श्रीलेखा के प्रति उसका व्यवहार अलग-अलग था। शायद वह परस्पर-विरोधी था। तुम लोगों को इस विषय में क्या कहना है?"

वैशाली ने तुरंत कहा, "सिंहकेतु का व्यवहार स्वर्णलता के प्रति एकदम अटपटा था। मुझे इसमें कहीं संदेह नहीं। दोनों

अनुचित नहीं कहलायेगा? राजा विशालवर्मा का सौमित्रा के उत्तर को पसंद करना भी अचंभे में डालता है । क्यों उसने उसे अपनी पुत्रवधु के रूप में स्वीकार किया? सौमित्रा के उत्तर पर प्रसन्नता प्रकट करके क्या उसने एक प्रकार का ढोंग नहीं रचा? क्या यह आत्मप्रवंचना नहीं है? मुझे इन संदेहों का स्पष्टीकरण चाहिए । यदि इनके बारे में जानते हुए भी आप कुछ नहीं बतायेंगे तो आपका सर फट जायेगा ।"

इस पर राजा विक्रम को कहना ही पड़ा, "एक साधारण व्यक्ति और किसी देश के शासक के बर्ताव में हमेशा काफी अंतर होता है । जो शासक या राजा होता है, उसे अपने राज्य में रहने वाला रह व्यक्ति अपने परिवार का सदस्य दिखता है । केवल भील स्त्री की भावना को ठेस नपहुंचाने की इच्छा के कारण ही सिंहकेतु ने वह पदार्थ बड़े चाव से खाया था । हालाकि वह उसे बिलकुल पसंद नहीं था । यह वास्तविकता स्वर्णलता जान नहीं पायी । स्वर्णलता की जगह अगर श्रीलेखा होती तो वह भी उस पदार्थ की खूब सराहना करती । पर इधर स्वर्णलता ने तो राजा को वैवा ही पदार्थ बनाकर खिलाना चाहा । इससे उसकी अबोधता का ही भान होता है । ऐसी स्त्रियों के लिए अंतःपुर में ही रहना बेहतर होगा । सही परख की क्षमता रखने वाली श्रीलेखा जैसी स्त्रियां ही अपने पति का साथ दे सकती हैं । विषयवर्मा द्वारा सुनायी गयी कहानी में वह स्वयं बना सिंहकेतु, सौमित्रा बनी श्रीलेखा और वैशाली ने स्थान लिया स्वर्णलता का । वास्तविकता जानकर ही राजा विशालवर्मा ने अपने बेटे की बात को माना और उसका विवाह उसकी इच्छानुसार सौमित्रा से किया । इसमें आत्मप्रवंचना कहीं नहीं है ।"

बैताल को उत्तर देने से राजा विक्रम का मौन भंग हो चुका था । इसलिए बैताल लाश समेत वहां से अदृश्य हो गया और पहले की तरह पेड़ की शाखा से लटकने लगा । (कल्पित)

[आधारः शर्मीला की रचना]

चंदामामा की खबरें

इन दिनों तीन लड़के खबरों में रहे । वे तीनों अमरीकी हैं । इनमें सबसे बड़ा लड़का भारत से है । इसका परिवार अमरीका में ही बसा हुआ है ।

आशा ज्योति

२० जनवरी को अमरीका के नये राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने पदभार संभाला । उसी सिलसिले में एक भोज का आयोजन किया गया । उसमें ५० विशिष्ट व्यक्ति विशेष रूप से आमंत्रित थे । उनमें १९ वर्षीय रोजार कुट्टन भी था जिसे बिल क्लिंटन ने 'आशा ज्योति' कहकर संबोधित किया । भारत के केरल राज्य से अमरीका में पहुंचकर वहां बसने वाले डाक्टर अप्पू कुट्टन का वह पुत्र है । रोजर कुट्टन के अनुसार "राष्ट्रपति का निमंत्रण पाकर मुझे, मेरी मां, मेरे पिता जी तथा मेरी बहन, हम सब को बड़ा हर्ष हुआ । मेरी मां तो इससे इतनी विह्वल हुई कि वह थोड़ी देर तक बोल ही न पायीं ।"

भोज से लौटने के बाद रोजर ने कहा, "इस ऐतिहासिक अवसर पर उपस्थित होकर मैंने इतिहास बनते ही नहीं देखा, बल्कि उस इतिहास का मैं एक हिस्सा बना ।"

रोजर का असली नाम राज है । वह जब तीन वर्ष का था, तभी से वह जिस किसी कार का नंबर देखता, वह नंबर उसे याद हो जाता । उसके पिता उसे हाकिंस विश्वविद्यालय ले गये, जहां होने वाली प्रवेश-परीक्षा में उसे ९० प्रतिशत अंक मिले । नौ वर्ष की आयु में वह गणित शास्त्र में स्नातक हो गया । फिर वॉलस्ट्रीट के कुछ अरबपतियों ने उसे अपना मनी मैनेजर नियुक्त किया । अब वह बिल क्लिंटन के आर्थिक सलाहकारों में से एक है ।

अमरीकी सरकार को अनुदान

अमरीका के उत्तर डकोटा में फार्गो के लारी विलेला नाम के एक बालक ने, जिसकी आयु १४ वर्ष है, अपने पौधों के व्यापार से जो कुछ कमाया है, उसमें से १००० डालर अनुदान के रूप में अमरीकी सरकार को भेज दिये हैं । बिल क्लिंटन ने राष्ट्रपति का पद संभालते ही बजट की कमी को पूरा करने के लिए आम जनता से अनुदान की अपील की थी, और इसके उत्तर में इस बालक ने अपने गाढ़े पसीने की कमाई को भेजते हुए यह अनुरोध किया था कि उसकी ओर से भेजी जानेवाली इस राशि का विद्या और एड्स-अनुसंधान में उपयोग किया जाये ।

सबसे छोटी आयु का प्रकाशक

अमरीका में देर रात टी.वी. कार्यक्रमों में संयोजक डेविज लेटरमन ने ग्लेन एलिन के ब्लेक स्लांस्की नाम के एक १०-वर्षीय बालक से भेंट वार्ता की । यह बालक चौथी कक्षा का छात्र है और "आउट ऑव द वर्ल्ड" नाम की एक समाचार पत्रिका पिछले चार वर्षों से चल रहा है । समूचे विश्व में इस पत्रिका के ग्राहक हैं और उससे भेंट करने वाला डेविड भी उन ग्राहकों में से एक है ।

भारत के पशु-पक्षी :

बिडाल परिवार

तेंदुए और चीते में ज़्यादा अंतर नहीं होता । अंतर केवल 'धब्बे' का है । तेंदुए के धब्बे गोलाई लिये होते हैं, जबकि चीते के धब्बे अपेक्षाकृत बड़े और असमान होते हैं, एवं उसके चेहरे और गर्दन पर टूटी हुई धारियां और पूंछ पर गोलाई वाली धारियां होती हैं । बाघ की तरह तेंदुआ और चीता भी बिडाल परिवार से हैं, लेकिन आकार में छोटे (२००-२१५ से.मी.) होते हैं । दोनों का रंग पीलापन लिये होता है । काला तेंदुआ या काला चीता बहुत कम पाये जाते हैं । हां, एक बात ज़रूर है-बाघ की संख्या जबकि कम होती जा रही है, तेंदुए और चीते की संख्या वैसे की वैसी बनी हुई हैं और ये देश में प्रायः हर जगह मिल जाते हैं । हमारे सुनने में अक्सर यह भी आ जाता है कि तेंदुए या चीते रिहायशी इलाकों में भी घुस जाते हैं ।

तेंदुए के दो प्रकार हैं । एक, 'क्लाउडिड' या धुंधले रंग का चीता जो पूर्वी हिमालय की पहाड़ियों में पाया जाता है, और दूसरा 'स्नो' या हिम तेंदुआ जो हिमालय के बर्फानी इलाकों में रहता है । हिम तेंदुआ बहुत सुंदर होता है और इसके रोएं स्लेटी रंग के होते हैं जिन पर लंबूतरे काले छल्ले या धब्बे रहते हैं । इस तेंदुए की खाल बडी कीमती समझी जाती है । इसलिए इसे हमेशा खतरा बना रहता है । ये दोनों ही प्रकार के तेंदुए आम तेंदुए से छोटे (१००-११० से.मी) होते हैं ।

लोक कथाओं में बिड़ाल को बाघ की मौसी कहा जाता है और यह भी कहा जाता है कि उसने बाघ को पेड़ पर चढ़ना छोड़कर बाकी सब कुछ सिखा दिया । लेकिन तेंदुए ने यह कला अच्छी तरह सीख ली है ।

अफ्रीका में पाया जानेवाला ''चीता'' ऐशिया मे लुप्त हो चुका है । इसे तेंदुए का मौसेरा भाई कहा जा सकता है ।

SNOW LEOPARD

PANTHER

LEOPARD

CLOUDED LEOPARD
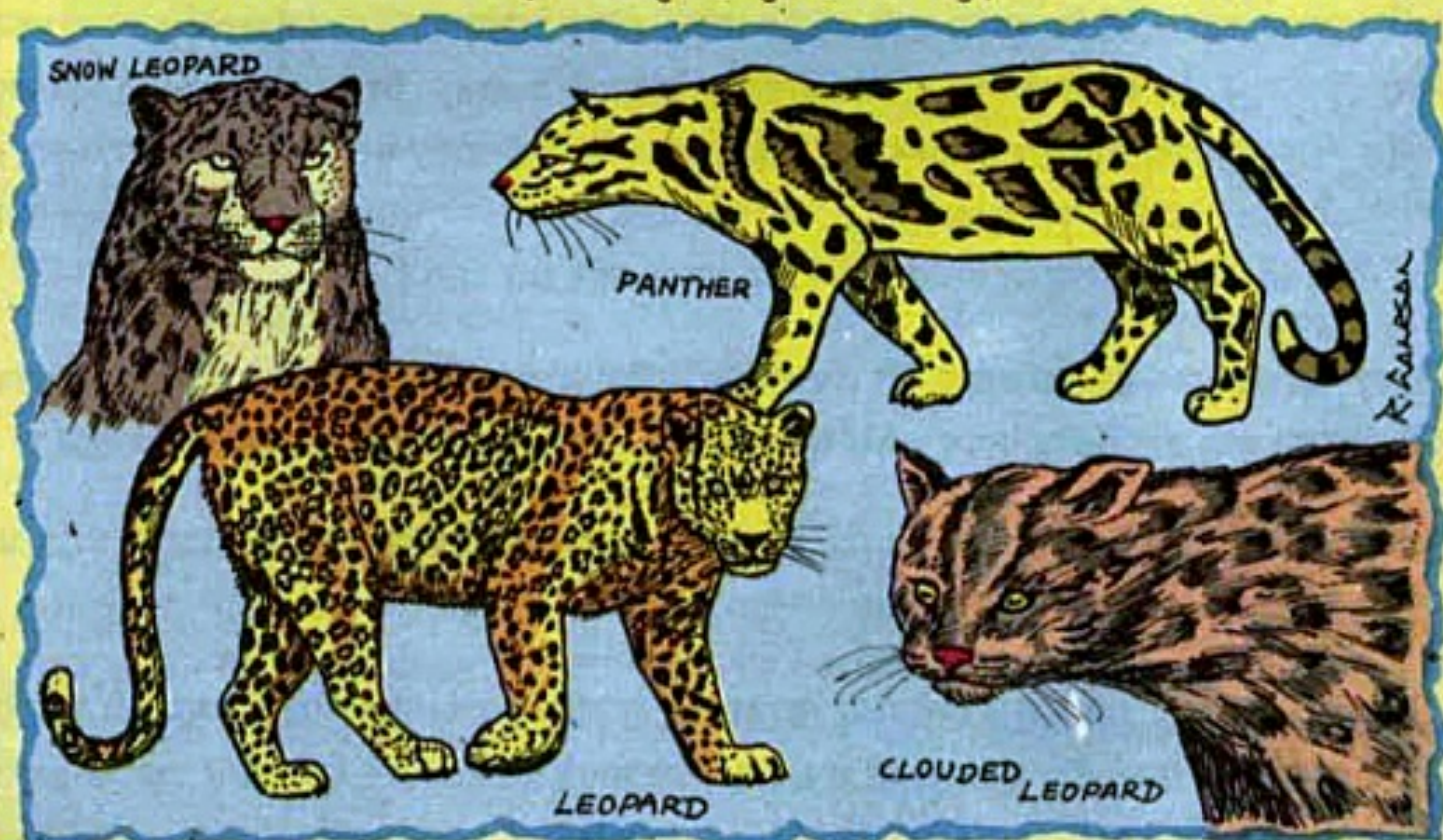
आज का भारत : साहित्य-दर्पण में

रात का समय था । राह काफी अंधियारी थी । एक यात्री अपनी रात पर अकेला चला जा रहा था । वह एक चरागाह में से गुज़र रहा था । एकाकए डाकुओं के एक गिरोह से उसका सामना हुआ । उसे पता चल गया था कि यह गिरोह एक गांव को लूटने जा रहा है ।

"वहीं रुको, वरना गोली मार दूंगा ।" डाकुओं के सरदार ने चिल्लाकर कहा, "कौन हो तुम?" उसने फिर प्रश्न किया ।

"मैं कानून से भागा हुआ एक इंसान हूं । लेकिन मैं उन विदेशियों से लड़ रहा हूं जो हमारी धरती मां पर

मिट्टी का दीया

नाजायज़ ढंग से शासन कर रहे हैं । मैं मासूम लोगों को परेशान नहीं करता ।" यात्री ने उत्तर दिया ।

"हम भी मासूम लोगों को परेशान नहीं करते । हम केवल अमीर लोगों को लूटते हैं या उन्हें मारते हैं ।" सरदार ने कहा ।

"ऐसा मत कहो । जैसे कि तुम्हें पता ही नहीं कि गरीब, मासूम किसान किस तरह तुम्हारे गिरोह का नाम सुनते ही पत्ते की तरह कांपने लगते हैं । इधर उन्हें पता चलता है कि तुम्हारा गिरोह उनके गांव की ओर बढ़ रहा है, उधर वे अपना घर-बार छोड़कर भाग खड़े होते हैं । वे अपनी ज़मीन पर हल भी नहीं चला सकते । तुम्हारा गिरोह जाता है तो पुलिस आ जाती है, और गांव वालों के लिए फिर मुसीबत खड़ी हो जाती है । क्या यह लोगों को परेशान करना या सताना नहीं? तब सताना और क्या होता है?"

यह बहस आपस में देर तक चलती रही जब तक कि गिरोह बिलकुल निरुत्तर नहीं हो गया । यात्री गांव की ओर बढ़ गया और गिरोह वापस जंगल में जा छिपा । लेकिन गांव डाकुओं के हमले से बच गया ।

यह यात्री कोई और नहीं, हमारे समय के बहुत बड़े सामाजिक कार्यकर्त्ता और सुधारक, गुजरात के रहनेवाले रवि शंकर महाराज थे ।

१९२७ की बात है । गांव के कई लोगों का विश्वास था कि रविशंकर महाराज बाढ़ के समय नदी के पानी की सतह पर चल सकते हैं । दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि बाढ़ से घिरे लोगों तक वह इतनी

तत्परता से पहुंचते थे कि लोगों को हैरानी होती थी । यह तभी संभव था जब कोई पानी की सतह पर चलकर उन तक पहुंचे ।

दरअसल, गांव के लोग महाराज को चमत्कारी व्यक्ति मानते थे । इसके कई कारण थे, क्योंकि एक बार ऐसा भी हुआ कि आपस में भिड़े हुए दो खतरनाक सांड इन्हें देखते ही एकदम पालतू पशुओं की तरह व्यवहार करने लगे ।

रवि शंकर महाराज मानव और पशु को बराबर प्यार देते थे । अगर कोई मानव दूसरों की निगाहों में पशु-समान भी होता, वह तब भी उसका तिरस्कार नहीं करते थे । वह खतरनाक से खतरनाक मुजरिम के मन को भी पूरी सहानुभूति से समझने की कोशिश करते थे । उन्हें एक चोर के मुंह से यह सुनने पर गुस्सा

करने के बजाय हंसी आ गयी होगी जब उसने कहा कि धन की देवी लक्ष्मी एक धनवान जमाखोर के घर से आजाद होना चाहती थी और उस देवी की चीखें मीलों दूर से सुनाई दे रही थीं और तभी वह उस घर में चोरी करने आया ।

'मनासाई ना-दिवा' (मिट्टी का दीया) गुजराती में लिखी रविशंकर महाराज के जीवन की कहानी है जो किसी उपन्यास से कम नहीं बांधती । रविशंकर महाराज का देहांत कुछ ही वर्ष पहले हुआ था । तब तक वह अपने जीवन की एक शताब्दी पार कर चुके थे । उनका जीवन ऐसी ही साहसी कथाओं से भरा हुआ है । इस जीवन-कथा के लेखक हैं झावेरचंद मेघानी (१८९७-१९४७) जो कि गुजराती के एक विख्यात लेखक थे । उन्होंने कई उपन्यास, नाटक, कहानियां और कविताएं लिखीं ।

क्या तुम जानते हो?

१. ताजमहल के पास से कौन सी नदी बहती है?
२. किस राज्य से लोकसभा में सबसे ज्यादा सदस्य भेजे जाते हैं?
३. वह कौन-सा पक्षी है जो प्रेम और शांति का प्रतीक है?
४. भूमि पर रहनेवाला सबसे बड़ा पशु कौन सा है?
५. कूचिपूड़ी नृत्य शैली भारत के किस राज्य की देन है?
६. किस का उल्लेख आम तौर पर विश्व को प्रकाश के रूप में किया जाता है?
७. कर्राकुरम दर्रा दो देशों को जोड़ता है । वे देश कौन से हैं?
८. भारत के पुराणों में आग का देवता किसे माना जाता है?
९. चीन की राजधानी तो बीजिंग है, लेकिन वहां का सबसे बड़ा नगर कौन सा है?
१०. भवनों में बचाव-लिफ्टों का आविष्कारकर्त्ता कौन है?
११. किस देश में सबसे ज्यादा चांदी होती है?
१२. अमरीका के किस काले नेता को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया?
१३. एफिल मीनार कहां पर स्थित है?
१४. तुर्की के इस्तंबूल नगर को पहले किस नाम से जाना जाता था?
१५. जब ब्रिटेन भारत को स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए राज़ी हुआ, तो वहां का प्रधानमंत्री कौन था?
१६. रेखागणित का जनक किसे माना जाता है?
१७. दक्षिणी अमरीका के चिली में कौन सी भाषा बोली जाती है?
१८. एक देश का झंडा पूरी तरह सफेद रंग का है । वह देश कौन-सा है?
१९. आधुनिक बैंकिंग प्रणाली कहां शुरू हुई?
२०. किसने पहले दरवाजों पर ताले लगाने और उन्हें खोलने के लिए चाबियों का इस्तेमाल करने की सोची?

उत्तर

१. यमुना
२. उत्तर प्रदेश ।
३. फाख़्ता (पेंडुकी) ।
४. नीली व्हेल मछली ।
५. आंध्रप्रदेश ।
६. ईसा मसीह
७. पाकिस्तान और चीन ।
८. अग्नि ।
९. शंघाई ।
१०. एलिशा ओटिस
११. मैक्सिको ।
१२. मार्टिन लूथर किंग ।
१३. फ्रांस की राजधानी पैरिस ।
१४. कुस्तुंतुनिया ।
१५. क्लीमेंट एटेली
१६. यूक्लिड ।
१७. स्पेनिश ।
१८. पश्चिमी सहारा ।
१९. इटली ।
१५. मिस्रियों ने ।

सिद्धेश का अहंकार

राजापुर गांव में सिद्धेश नाम का एक व्यक्ति रहता था । वह बड़ा गुस्सैल था । गुस्से में किसी को भी गाली देने या मार-पीट करने पर उतारू हो जाता । वह अपने या पराये में भी नहीं करता था । गांव के लोग उसे अच्छी तरह समझते थे । इसलिए उससे वे दूर ही रहते थे ।

एक बार चंदर नाम के एक व्यक्ति की भैंस सिद्धेश के खेत में घुसकर चरने लगी तो पीटते-पीटते उसने उसे अधमरा कर दिया । फिर वह चंदर के घर गया और ज़ोर से चिल्लाते हुए बोला, "अबे ओ, चंदर । तुम्हारी भैंस ने मेरे खेत में घुसकर सारी फसल बरबाद कर दी है । अब मैं अपनी गायों को तुम्हारे खेत में हांककर तुम्हारी फसल बरबाद कर दूंगा ।"

चंदर सिद्धेश के गुस्से को जानता था । इसलिए वह शांत स्वर में बोला, "सिद्धेश, भैंस तो आखिर भैंस ही है । फिर तुम्हारे खेत में कोई फसल तो थी नहीं । अगर उसने वहां घास चर ली, तो उसके लिए तुम मुझे क्षमा कर दो ।"

पर सिद्धेश अपनी बहक में बोला, "हां, मैं जानता हूं, वह भैंस है, बुद्धिहीन है, और एक बुद्धिहीन की भैंस है । अब ज़रा कान खोलकर सुन लो । एक हफ्ते तक तुम इस भैंस के दूध मेरे घर पहुंचाते रहोगे ।"

चंदर लाचार था । वह उसके यहां एक हफ्ते तक दूध पहुंचाता रहा ।

इसी तरह एक दिन एक और घटना घटी । सिद्धेश ने अपने गांव के बनिये से जो गुड़ खरीदा था, वह तोल में कम निकला । जैसे ही सिद्धेश को इसका यकीन हो गया,वह ज़ोर-ज़ोर से गरजता हुआ बनिये की दुकान पर जा पहुंचा और उससे बोला, "क्यों बे, मुझे ही धोखा देता है?"

प्रमिला

"सिद्धेश," बनिये ने कहा, "गलती कभी-कभी हर किसी से हो जाती है। मैंने जानबूझकर तुम्हें कम तोल नहीं दिया। हां, अगर तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है तो तुम आइंदा यहां से खरीदारी करना बंद कर दो। लेकिन चीखने-चिल्लाने और गालियां देने की ज़रूरत नहीं है।" बनिये के स्वर में विनम्रता थी।

"अच्छा तो तू मुझे सीख देता है? मैं देख लूंगा तुझे।" और यह कहकर सिद्धेश वहां से पांव पटकता हुआ चला गया।

बनिये ने एक झोंपड़ी में भूसे की कुछ बोरियां रखी थीं। रात के समय उस झोंपड़ी में आग लग गयी जिससे सारा सामान जलकर राख हो गया। गांव का हर व्यक्ति जानता था कि यह करतूत सिद्धेश की है। लेकिन मारे डर के कोई मुंह नहीं खोलता था।

कुछ दिनों के बाद गांव में एक संन्यासी आया। संन्यासी के पास कई प्रकार की सिद्धियां थीं। गांव वालों को जब इसका पता चला तो उन्होंने उसे एक-एक करके अपने घर पर खाने पर बुलाना शुरू किया।

सिद्धेश को जब इसका पता चला तो उसने अपनी पत्नी से कहा, "देखो गांव का हर छोटा-बड़ा आदमी उस संन्यासी को हर रोज भोजन करा रहा है। मेरा नाम दूर-दूर तक हर कोई जानता है। अगर मैं चुप रहता हूं तो मेरी बदनामी होगी। इसलिए, आज दोपहर के भोजन के लिए मैं संन्यासी को अपने यहां आमंत्रित करने जा रहा हूं। तुम जितने भी पकवान तैयार कर सकती हो, कर डालो।"

फिर सिद्धेश उस संन्यासी के पास गया और उससे बोला, "मेरा नाम सुनकर गांव का हर व्यक्ति कांपता है। तुम्हें इसका पता चल गया होगा। खैर, आज दोपहर का भोजन तुम मेरे यहां करो।"

उस समय संन्यासी के पास कुछ और लोग भी बैठे थे। उनमें से एक ने कहा, "यही बात, सिद्धेश, तुम थोड़ी शिष्टता से भी कह सकते थे।"

पर संन्यासी ने कहा, "मुझ पर इस बात का कोई असर नहीं पड़ता कि कोई मुझे कैसे बुलाता है। मेरे लिए सब एकसमान हैं। तुमने मुझे भोजन पर बुलाया है, मैं ज़रूर आऊंगा।"

सिद्धेश को संन्यासी के दो टूक उत्तर से संतोष मिला। उसने तुरंत कहा, "वाह! क्या जवाब दिया है इस बेवकूफ को। लेकिन एक बात याद रखना, मैं जैसा चाहता हूं, वैसा ही होना चाहिए। तुम्हें ठीक बारह बजे मेरे घर पहुंचना होगा।" और यह कहकर सिद्धेश वहां से चला गया।

सिद्धेश ने जैसा चाहा था, संन्यासी वैसा ही करने के लिए उठ खड़ा हुआ, लेकिन हुआ यों कि जैसे ही वह चलने को हुआ, वैसे ही वहां कुछ लोग दौड़े-दौड़े आये और उन्होंने अपने साथ लाये एक व्यक्ति को वहीं पर लिटा दिया जिसे सांप ने काट लिया था। वे संन्यासी से प्रार्थना कर रहे थे कि वह मंत्र फूंककर उसे ठीक कर दे।

संन्यासी ने उस व्यक्ति के माथे पर थोड़ी भभूति लगायी और कहा कि अच्छे मन से सब की भलाई चाहना ही मंत्र फूंकना है।

भभूति का लगना था कि यह व्यक्ति उठकर ऐसे खड़ा हो गया जैसे कि वह नींद से जगा हो।

खैर, संन्यासी सिद्धेश के घर पहुंचा तो ज़रूर, लेकिन थोड़ी देर से। सिद्धेश ने उसकी ओर गुस्से से देखते हुए कहा, "मैंने कहा था न कि मैं जैसा चाहता हूं, वैसा ही होना चाहिए। मैंने तुम्हें बारह को बुलाया था। अब साढ़े बारह हो रहे हैं। अब तुम वापस जा सकते हो। मैं भोजन कर चुका।"

"अतिथि, नारायण के समान होता है। अतिथि को बुलाकर उसकी प्रतीक्षा किये बिना भोजन कर लेना एक गृहस्थ को शोभा नहीं देता। और तो और तुम अब मुझे बिना भोजन कराये लौट जाने को कह रहे हो, ऐसा पाप मोल मत लो।" संन्यासी उसे कहने से रह न सका।
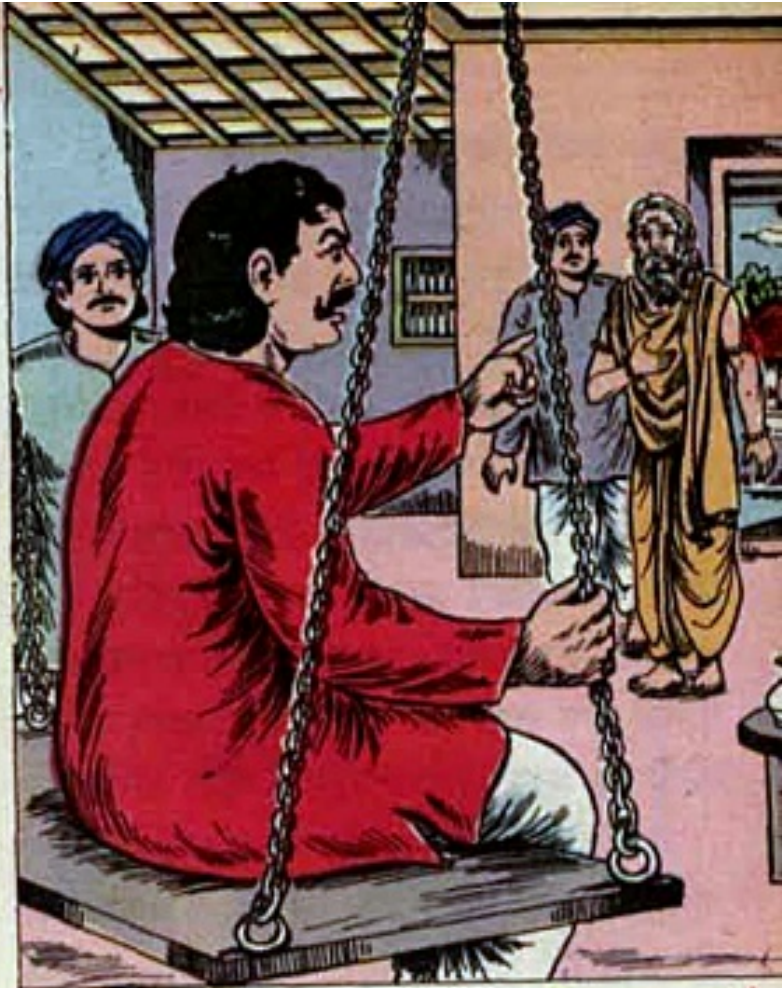
इस पर सिद्धेश और गुस्से में आ गया और बोला, "अरे, मुझे ही सीख दे रहे हो।" और इसके साथ ही उसने संन्यासी के गाल पर एक थप्पड़ जड़ दिया।

यह दृश्य लोगों की बर्दाश्त के बाहर था। वे सिद्धेश को मारने को हुए, लेकिन उन्हें रोकते हुए संन्यासी ने कहा, "आदमी में अहंकार नहीं होना चाहिए। तुम इसे छोड़ दो। इसके अहंकार का बदला इसे भगवान् से मिलेगा।"

लोगों ने उसे छोड़ दिया ।

ठीक छह महीने बाद सिद्धेश ने जिस हाथ से संन्यासी पर वार किया था, उस हाथ की हथेली पर एक फोड़ा उग आया और उसने ज़हरबाद का रूप ले लिया । वैद्यों के अनुसार उस ज़हरबाद का कोई इलाज नहीं था । फिर भी उन्होंने उसका खूब इलाज किया । लेकिन उससे कोई फायदा नहीं हुआ । फिर उन्होंने सलाह दी कि शल्यक्रिया करके उस हाथ कों काट दिया जाये, वरना फोड़े का ज़हर सारे शरीर में फैल जायेगा ।

अब सिद्धेश को वह पुरानी बात याद आयी । उसे लगा कि उसने अकारण ही संन्यासी पर हाथ उठाया था । उसके मन में पश्चात्ताप भी पैदा हुआ । वह अपना हाथ किसी भी कीमत पर कटवाने को तैयार नहीं था । क्योंकि उसे डर था कि गांव के लोग उसका कटा हाथ देखकर उसकी खिल्ली उड़ायेंगे । लेकिन इसका एक तो असर ज़रूर हुआ कि उसका क्रोध और अहंकार पूरी तरह से जाते रहे ।

अभी कुछ दिन ही बीते थे कि संन्यासी उसे देखने आया और उससे प्यार से बोला, "कैसे हो, सिद्धेश?"

"स्वामी जी, आप मेरी यह हालत देख ही रहे हैं । यह दंड मुझे आपसे मिला है या भगवान से, मैं नहीं जानता । "फिर वह रोने लगा और रोते-रोते संन्यासी के पांव पर गिर पड़ा ।

संन्यासी ने उसे संत्वना दी और कहा, "बेटा, तुमने अपने क्रोध पर विजय पा ली है । तुमने पश्चात्ताप में अपना अहंकार भी त्याग दिया है । यह दंड तुम्हें तुम्हारे अहंकार के कारण मिला ।" और यह कहकर संन्यासी ने सिद्धेश का हाथ अपने हाथ में लेकर उस पर भभूति लगायी ।

देखते ही देखते सिद्धेश का ज़हरबाद गायब होने लगा । इसके साथ ही संन्यासी भी वहां से गायब हो गया । इस पर हर किसी को हैरानी हुई ।

लेकिन हां, सिद्धेश अब एक नेक इंसान बन चुका था ।

निडर सलमा

पुराने ज़माने में तुर्किस्तान में अमीरखां नाम का एक आदमी रहता था। उसकी पत्नी की मौत हो चुकी थी और उसकी बेटी सलमा अब सयानी हो चुकी थी।

सलमा बचपन से ही भूत-प्रेतों की कहानियां सुन-सुनकर काफी निडर हो चुकी थी। वह यह जानती ही नहीं थी कि डर किस चिड़िया का नाम है।

एक दिन अमीरखां के घर में एक छोटी-सी दावत हुई। उस दावत में अमीरखां के बचपन का एक दोस्त अहमद भी शरीक हुआ। अहमद ने खालों के व्यापार से काफी दौलत कमायी थी। दावत आधी रात तक चलती रही और दुकान से खरीद कर लायी गयी शहद वाली रोटियां भी खत्म हो गयीं। अमीरखां ने सलमा को बुलाया और कहा, "बेटी तुम जाकर दादा की दुकान से चार शहद वाली रोटियां ले आओ।"

अहमद को यह बात सुनकर हैरानी हुई। उसने कहा, "वह तो श्मशान के पार है। आधी रात के वक्त तुम सलमा को वहां भेज रहे हो। क्या उसे वहां जाने में डर नहीं लगेगा?"

इस पर अमीरखां ने अपना सर हिलाते हुए कहा, "नहीं, सलमा डरती नहीं।"

बहरहाल, सलमा उस दुकान पर गयी और अंधेरी रात में से रोटियां ले आयी। इस पर अहमद ने कहा, "कल चांद बिलकुल नहीं निकलेगा। क्या तुम्हारी बेटी कल रात भी श्मशान में जाकर वहां से एक खोपड़ी ला सकती है?"

अमीरखां ने हंसते हुए उत्तर दिया, "बस, एक ही खोपड़ी? तुम चाहो तो वह एक-साथ सभी खोपड़ियां उठा लायेगी। मज़ा तो तब है जब तुम शर्त लगाओ। हो जाये शर्त?"

अहमद ने सचमुच शर्त लगा दी। फिर

तुर्की लोककथा

जैसे ही सलमा वहां पहुंची और उसने अंधेरे में टटोलकर एक खोपड़ी उठायी, वैसे ही बूढ़े अख़्तर ने अजीब आवाज़ में कहा, "ऐ लड़की, इसे हाथ मत लगा। यह मेरी मां की खोपड़ी है।"

सलमा ने झट से उस खोपड़ी को छोड़ दिया और एक दूसरी खोपड़ी उठा ली। अख़्तर ने फिर उसी अजीबो-गरीब आवाज़ में कहा, "ऐ लड़की, मत छुओ उसे। वह मेरे बाप की खोपड़ी है।"

यह सुनते ही सलमा गुस्से में आ गयी। उसने वह खोपड़ी नीचे पटक दी और कब्र के उसी ओर बढ़ गयी जहां से आवाज़ आ रही थी।

अंधेरे में गड्ढे में छिपे अख़्तर का गंजा सर एक खोपड़ी की तरह ही दिखाई दे रहा था। उस खोपड़ी को उसने अपने हाथ में लेकर इधर-उधर हिलाया और झट से पहचान गयी। फिर वह ज़ोर से चीखी, "अरे, ओ गंजे सर वाले शैतान के बच्चे। ज़रा कान खोलकर सुन। अगर अब तुमने अपना मुंह खोला तो मैं पत्थर मार-मारकर तुम्हारी खोपड़ी का चूरा कर दूंगी। खबरदार।" और इसके साथ ही उसने उसके दो-चार लातें भी ज़ड दीं।

सलमा की लातें खाकर अख़्तर उसी गड्ढे में बेहोश हो गया और सलमा एक खोपड़ी लेकर घर लौट आयी। इस तरह अहमद की हार हुई और उसे अमीरखां को अपनी शर्त के मुताबिक सौ अशर्फियां देनी पड़ीं।

उसने सुबह सवेरे ही अख़्तर नाम के एक गरीब बूढ़े को पैसे का लालच देकर समझाया कि वह रात के वक्त श्मशान में छिप जाये और फिर जैसे उसे बताया गया है, करे।

आधी रात हुई और अहमद सीधा अमीर खां के घर जा पहुंचा। वहां पहुंचकर उसने सलमा से कहा कि वह तुरंत जाये और श्मशान से एक खोपड़ी ले आये।

अमीरखां ने अपना सर हिलाया और सलमा को जाने के लिए कहा। सलमा उसी वक्त श्मशान की ओर चल दी। अहमद की योजना के अनुसार बूढ़ा अख़्तर तो वहां पहले से ही मौजूद था और एक कब्र के पीछे गड्ढे में छिपा हुआ था।

उस दिन से सलमा का नाम उस गांव में ही नहीं, आस-पास के गांवों में भी निडर सलमा के रूप में जाना जाने लगा ।

उस गांव के पास ही एक और गांव में सुलेमान नाम का एक अमीर नौजवान रहता था । वह काफी सुंदर था, फिर भी उसकी शादी नहीं हुई थी । उसके घर में नौकर नौकरानियां दो-एक हफ्ते से ज्यादा टिक नहीं पाते थे, क्योंकि ऐसा कहा जाता था कि उस घर में सुलेमान की मां प्रेतनी बनकर घूमती है और उन्हें तंग करती है ।

सुलेमान सलमा की निडरता के बारे में काफी कुछ सुन चुका था । इसलिए उसने सलमा के पिता को अच्छी खासी तनख्वाह का लालच देकर सलमा को अपने यहां नौकरी पर रख लिया ।

सलमा अब सुलेमान के घर में थी । वह जब सुलेमान के सामने खाना परोसती तो साथ में उसकी मां के प्रेत के लिए भी परोस देती, और बड़े प्यार से कहती, "आओ, खा लो मां जी, बहुत बढ़िया शोरबा बना है ।" इस तरह वह उससे बड़ी मीठी-मीठी बातें करती जिससे सुलेमान की मां का प्रेत उसके वश में हो गया ।

एक दिन सुलेमान को शहर में जाना पड़ा । सलमा अब घर में अकेली थी । रात को जब वह घर में काम करने लगी तो सुलेमान की मां का प्रेत उसे दिखाई पड़ा । लेकिन सलमा डरी नहीं ।

इस पर वह प्रेत बोला, "क्यों री छोकरी,

मुझे देखकर तुम्हें डर नहीं लगता?"

सलमा ने बड़े इत्मीनान से उत्तर दिया, "डर, डर क्या होता है? मैं तो कभी ज़िंदगी में डरी नहीं । इसलिए आज क्या डरूंगी, और तुम तो बहुत अच्छी मां हो । तुमसे डर कैसा?"

इस पर उस प्रेत ने मुस्करा कर कहा, "तुम्हारी यह निडरता और सूरत मुझे काफी पसंद आयी हैं बेटी । लेकिन इस घर की मालकिन बनने केलिए तुम में काफी होशियारी होनी चाहिए । मैं नहीं जानती कि तुम में वह होशियारी है कि नहीं ।"

प्रेत का प्रश्न सुनकर सलमा ने केवल मुस्करा दिया । तब प्रेत ही कुछ सोचकर बोला, "इस घर के निचले हिस्से में एक

अंधेरी कोठरी है। क्या तुम बिना डरे मेरे साथ वहां तक आ सकती हो?''

''हां मां जी। मैंने कहा न कि मैं किसी चीज से नहीं डरती सलमा ने उत्तर दिया, और फिर उस प्रेत के पीछे-पीछे चल दी। प्रेत के पिछले हिस्से से रोशनी आ रही थी। सलमा उसी रोशनी की मदद से उस अंधेरी कोठरी में उतर गयी। वहां एक जगह ईंटों का ढेर था।

प्रेत ने सलमा से कहा कि वह उन ईंटों को हटा दे। सलमा ने वैसा ही किया। वहां उसे दो पीतल की सुराहियां दीख पड़ीं। एक सुराही काफी बड़ी थी और दूसरी काफी छोटी। दोनों सुराहियों में सोने के सिक्के भरे हुए थे।

प्रेत ने कहा, ''सलमा, मैं अब तक अपने बेटे की हिफाजत के लिए यहां घूम रही थी। अब मुछे यहां रहने की ज़रूरत नहीं। मुझे तुम बहुत पसंद हो। वह बड़ी सुराही तुम मेरे बेटे को दे देना और छोटी अपने पास रख लेना। अब मैं यहां कभी नहीं आऊंगी। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है।'' और यह कहकर वह प्रेतनी वहां से गायब हो गयी।

सुबह जब सुलेमान शहर से लौटा तो सलमा ने उसे रात की घटना के बारे में सब कुछ बता दिया और बोली, ''आप की मां ने कहा था कि यह बड़ी सुराही मैं ले लूं और छोटी आपको दे दूं।''

सुलेमान फौरन ताड़ गया। उसने हलके से मुस्करा कर कहा, ''सलमा, मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं। अब बड़ी-छोटी, दोनों सुराहियां हमारी होंगी। इनका सोना सारा हमारा ही होगा। क्यों, क्या खयाल है तुम्हारा?''

सलमा का सर लज्जा से झुक गया। वह अपने पिता के पास गयी और उसे सारी बात बता दी। बेटी की बात सुनकर अमीरखां बहुत खुश हुआ। फिर एक ही हफ्ते बाद सलमा और सुलेमान की शादी हो गयी। यह शादी बड़ी धूमधाम से हुई।

इस तरह सलमा की निडरता उसके लिए वरदान बन गयी।

राम जब रथ पर सवार होकर रावण पर बाणों की वर्षा करने लगे तो रावण के क्रोध का पारावार न रहा । उसने राम पर गंधर्वास्त्र का प्रयोग किया । रावण के उस अस्त्र को उन्होंने तुरंत पहचाना और उसे अपनी शक्ति से नष्ट कर दिया । इसके बाद रावण ने दवास्त्र का प्रयोग किया और उसे भी उन्होंने अपने देवास्त्र से नष्ट कर दिया ।

अब रावण ने उन पर अतिभयानक राक्षसास्त्र का प्रयोग किया । उस अस्त्र से अनेक विषैले सर्प निकले जो अपने मुंह से आग उगल रहे थे । वे सर्प राम की ओर बढ़ने लगे । तब राम ने तुरंत उन पर गरुड़ास्त्र का प्रयेग किया । उस अस्त्र से अनेक गरुड़ पैदा हो गये जिन्होंने उन विषैले सर्पों को नष्ट कर दिया ।

रावण अब गुस्से से पागल हो गया था । वह अंधा-धुंध कोई भी बाण लेकर राम पर छोड़े जा रहा था ।

एक बाण इतना शक्तिशाली था कि उसने राम के रथ का ध्वज-स्तंभ काट गिराया । फिर कुछ बाणों ने राम के रथ के घोड़ों को घायल कर दिया । राम और रावण के बीच चल रहे इस युद्ध को देव, गंधर्व, यक्ष और किन्नेर, इत्यादि सभी अचंभित होकर देख रहे थे । उन्होंने यह भी देखा कि राम भी रावण के बाणों से कुछ-कुछ घायल हो गये हैं । वे बहुत दुखी हुए ।

रावण के बाणों से राम का इस तरह घायल
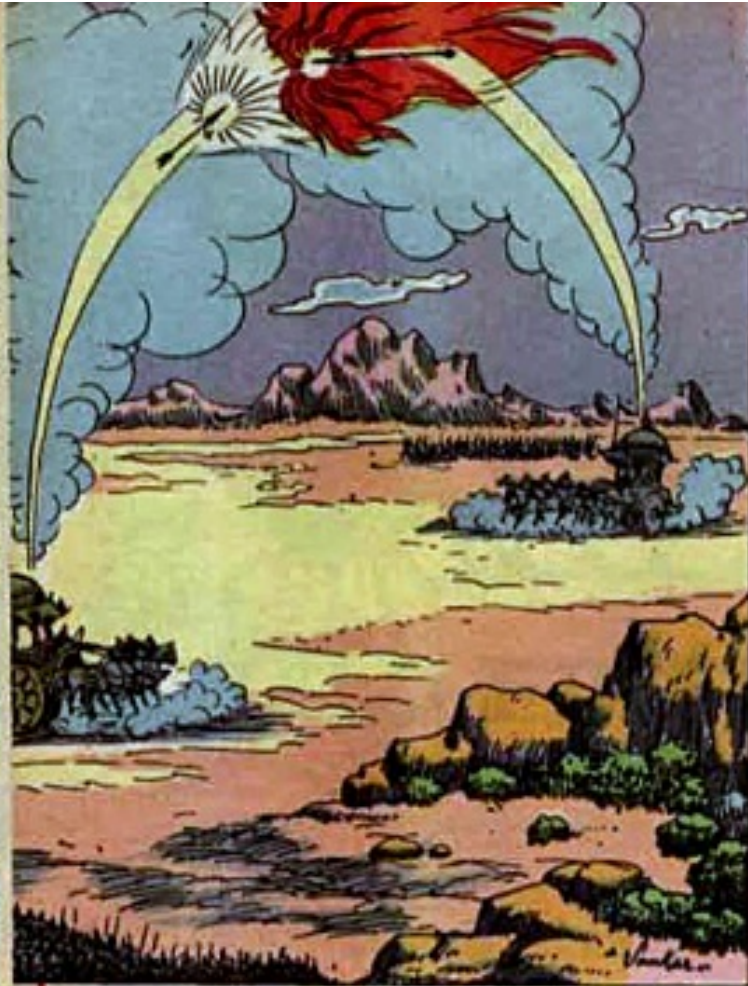
हो जाना वैसे तो आम बात थी, लेकिन वानरों को इस बात से काफी दुख हो रहा था। वे राम को इस तरह लहूलुहान होते देखकर मन ही मन अशांति का अनुभव करने लगे। कुछ वानरों की आंखों से आंसू बहने लगे। मगर राक्षसों को इस पर काफी स्फूर्ति मिल रही थी। वे दुगने उत्साह से लड़ रहे थे।

उधर विभीषण और उसके साथ खड़े कुछ वानर योद्धा यह देखकर चिंतित हो रहे थे। उन्हें लगा कि युद्ध में रावण का पलड़ा भारी होता जा रहा है। अब रावण के हाथ में वज्रायुध के समान एक शक्तिशाली शूल दिखाई दे रहा था।

वह घना धुआं छोड़ रहा था और उससे लाल-पीली लपटें भी निकल रही थीं। वह वाकई बहुत खतरनाक दीख रहा था।

रावण ने उस शूल को ऊंचा उठाते हुए राम को ललकारा, "हे राम। देखो यह तुम्हारी मृत्यु का परवाना है। एक ही क्षण में यह तुम्हें और तुम्हारे भाई लक्ष्मण को भस्म कर देगा। इसमें मेरी बहन का अपमान, मेरे पुत्रों का वध और अनेक राक्षस वीरों का संहार छिपा हुआ है। यह उन सब का बदला लेगा।" और इसके साथ ही उसने वह शूल राम पर छोड़ दिया।

वह शूल महावेग के साथ चारों ओर ज्वालाएं फैलाता हुआ राम की ओर चलने लगा। वह घना धुआं भी छोड़ रहा था जिससे समूचा वायुमंडल अंधकारमय हो गया। राम ने कई बाणों का उस पर प्रयोग किया, किंतु वे सब बेकार गये और राख बनकर हवा में बिखर गये। आखिर, राम जान गये कि वह अस्त्र कितना शक्तिशाली और भयावना है। तब उन्होंने इंद्र के रथ के साथ आयी महाशक्ति का उस अस्त्र पर प्रयोग किया। उस महाशक्ति से जैसे ही रावण का वह अस्त्र टकराया, वह निस्तेज होकर छिन्न-भिन्न हो गया और धरती पर आ गिरा।

जैसे ही रावण का अस्त्र, इस तरह राम के द्वारा छोड़ी गयी महाशक्ति से टकराकर नष्ट हुआ। वानरों में अपूर्व आनंद की लहर दौड़ गई। वे उत्साह से दुगना बल पाकर राक्षसों से अंधाधुंध युद्ध करने में लग गये। यह परिणाम देखकर राक्षस जरा नीरस पड़

गये और आश्चर्य से एक बार राम की सोर और अपने राजा रावण की ओर देख रहे थे । उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा कि रावण की ऐसी बुरी हालत हो रही है ।

राम का भी उत्साह बढ़ गया था । उन्होंने रावण पर विविध अस्त्रों का प्रयोग करना शुरू किया । रावण के भीतर अब बुरी तरह खलबली मची हुई थी । उसने जब अपने शूल की यह हालत देखी तो उसका दिल दहला गया और भय से वह कांपने लगा । रावण के सारथी ने जब स्थिति को इतना नाजुक पाया तो वह रथ को युद्ध भूमि से दूर ले जाने लगा । रावण उसमें मूर्छित पड़ा था । बाकी राक्षस हाहाकार कर उठे थे ।

जब रावण का रथ युद्धभूमि से कुछ दूर हटा तो रावण की संज्ञा लौटी । वह मारे क्रोध के अपने सारथी पर ही बरस पड़ा, "अरे दुष्ट, तुमने मेरी आज्ञा के बिना रथ को युद्ध भूमि से क्यों हटाया? क्या तुम मुझे कायर और असमर्थ समझते थे? क्या मैं राम के बाणों की युक्ति नहीं जानता? मुझे अपमानित करने वाला यह विवेकहीन कदम तुमने कैसे उठाया? क्या तुम्हें शत्रुओं से ऐसी मूर्खता करने के लिए किसी प्रतिफल की, अपेक्षा है? रथ को तुरंत रण-क्षेत्र में ले चलो ।"

ऐसे कटु वचन सुनकर सारथी का चेहरा उतर गया । उसने कहा, "प्रभु, मैं आपकी कुशलता चाहता हूं । इसलिए मैंने रथ को युद्ध-भूमि से हटाया । राम के तीव्र बाणों का आप उसी तीव्रता से उत्तर नहीं दे पा रहे थे । आप काफी थक चुके थे । यही नहीं, रथ के घोड़े भी काफी थक चुके थे । मुझे लगा हमें कुछ आराम की ज़रूरत है । इसीलिए मैंने यह कदम उठाया । इसके अलावा मुझे और किसी प्रतिफल की अपेक्षा नहीं, न ही मेरे मन में और कोई विचार आया । युद्ध-भूमि में रथ का कैसे संचालन करना है, यदि मैं यह न जानता तो मैं सारथी कैसे बनता? जो हुआ सो हुआ, अब आप मुझे जैसी आज्ञा दें ।"

सारथी की बातें सुनकर रावण उसकी राजभक्ति और सूझ-बूझ के प्रति आश्वस्त हुआ और मन ही मन उसकी सराहना करते हुए उसे अपने हाथ का अमूल्य रत्नकंकण
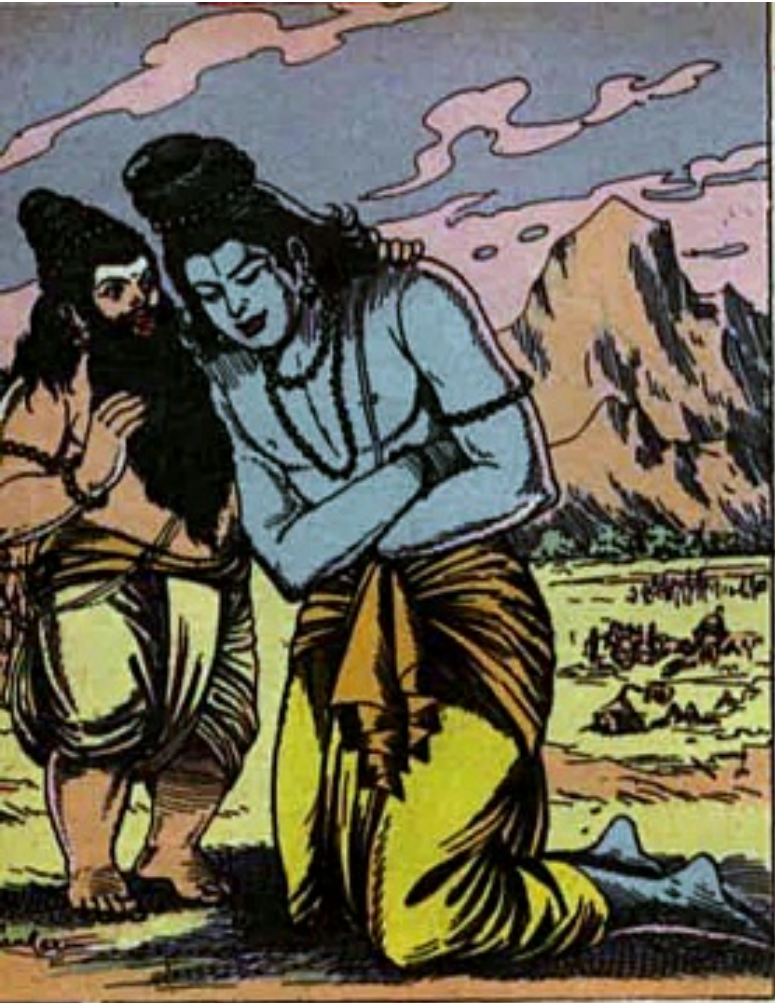
देकर बोला, "यह तुम्हारी राजभक्ति के लिए हमारा पुरस्कार है । अब मैं एक ही बाण से राम का संहार करने जा रहा हूं । अपने मन में यह विचार कभी भी न आने देना कि मैं थक गया हूं । रथ को अब अविलंब उधर ले चलो ।"

तब सारथी ने रावण के रथ को ऐसे बिंदु पर ला खड़ा किया जिससे राम पर अतितीव्रता से प्रहार कर सकता था ।

उस समय राम बहुत थके हुए थे और रावण से युद्ध करने की स्थिति में नहीं थे । राम-रावण युद्ध देखने आये देवताओं में अगस्त्य महर्षि भी वहीं थे । वह त्रिकालदर्शी थे । उन्होंने स्थिति के गांभीर्य को समझा और राम से बोले, "हे राम! तुम्हारी इस थकान को दूर करने और तुम्हारे भीतर फिर से युद्धोत्साह पैदा करने के लिए मैं तुम्हें आदित्य स्तोत्र बताता हूं । स्तोत्रों में यह सर्वोत्तम है । इसका जाप करने से तुम फिर स्फूर्ति से भर जाओगे और रावण के साथ युद्ध कर सकोगे ।" और इसके साथ ही उन्होंने राम को आदित्य स्तोत्र का ज्ञान दिया और वहां से चले गये ।

राम ने उसे स्तोत्र का तीन बार बड़े भक्तिभाव से जाप किया । इससे उनकी शक्ति और उत्साह दुगुने हो गये । उन्होंने अपना धनुष और बाण फिर से संभाले और इंद्र द्वारा भेजे गये रथ पर जा बैठे । फिर वह रथ के सारथी मातलि से बोले "मातलि, अब मैं रावण का अवश्य अंत कर दूंगा । तुम रथ को पूरी सतर्कता के साथ चलाओ । तुम देवेंद्र के सारथी हो । तुम्हें कुछ भी बताने की ज़रूरत नहीं । फिर भी मैं तुम्हें सतर्क रहने के लिए कह रहा हूं ताकि कहीं किसी प्रकार की चूक न हो जाये ।"

"आप आश्वस्त रहिए ।" मातलि ने मंदहास करते हुए कहा ।

जैसे ही राम रथ पर सवार हुए, वैसे ही मातलि ने अश्वों को हांकना शुरू किया । अश्व हवा से बातें करने लगे । इससे धूल भी इतनी उड़ी कि वह दूर-दूर तक फैल गयी और उसने रावण को भी चारों ओर से घेर लिया । दरअसल, यह मातलि के रथ-संचालन के कौशल का कमाल था । इससे रावण का क्रोध धधक उठा और वह
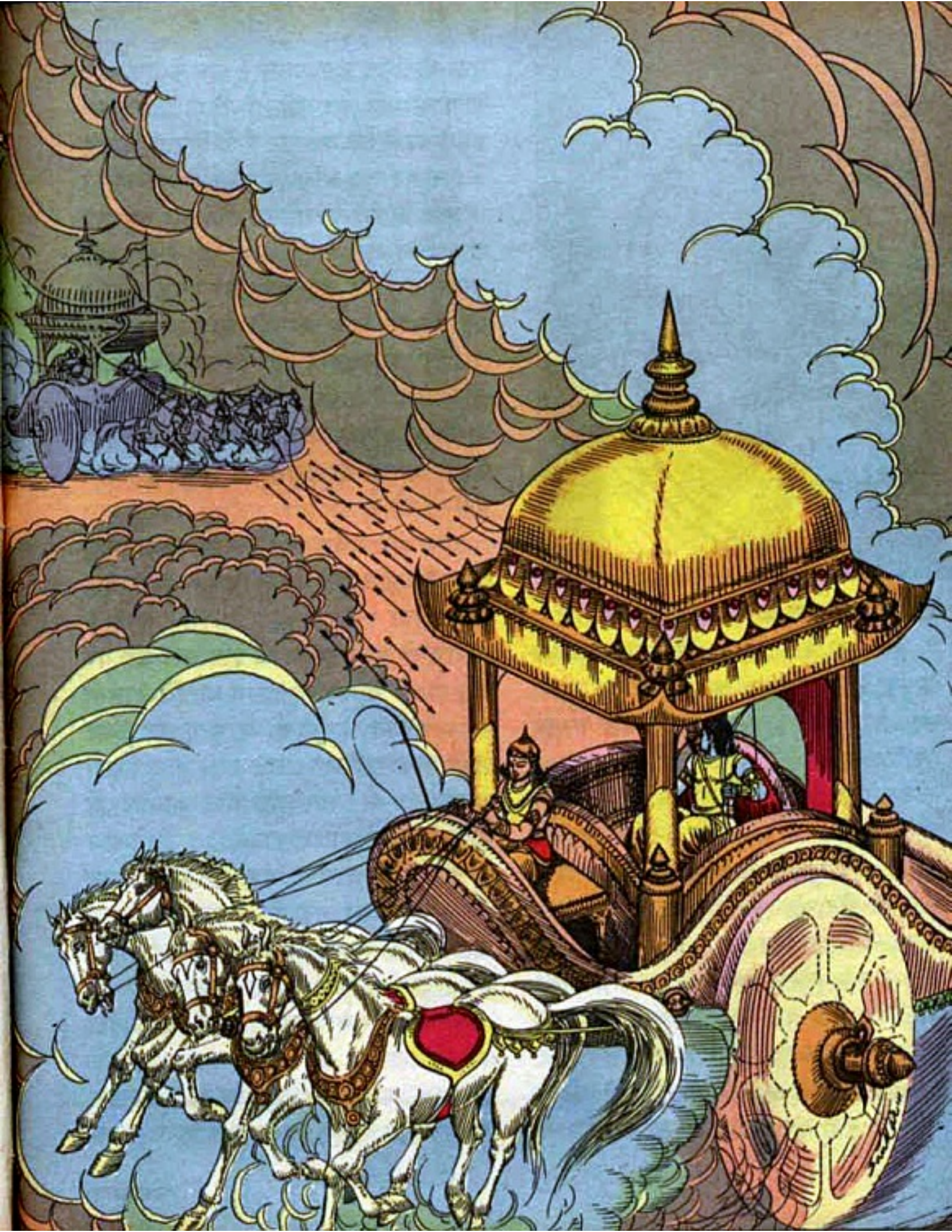
राम पर बाण ही बाण बरसाने लगा ।

अब राम ने इंद्र द्वारा भेजे गये धनुष को उठाया और उस पर बाण साधकर रावण पर छोड़ दिया । इस समय उनमें भरपूर उत्साह था ।

देखते ही देखते राम और रावण के बीच चल रहे युद्ध ने भयानक रूप धारण कर लिया । यह युद्ध इतना भयानक था कि दोनों पक्षों के वीर मुंह बाये देखते ही रह गये । उनके चेहरे भयाक्रांत थे ।

इस तरह दोनों महान योद्धाओं के बीच थोड़ी देर तक युद्ध चलता रहा । तब राम ने एक ऐसा बाण छोड़ा जिसने रावण के सर को काटकर अलग कर दिया । लेकिन जैसे ही वह सर कटा, रावण के धड़ से एक और सर उग आया । राम ने एक और बाण से उस सर को भी उड़ा दिया, पर इससे पहले कि वह सर नीचे गिरता, रावण के धड़ पर एक और सर प्रकट हो गया था ।

राम ने इस प्रकार लगभग एक सौ बार रावण का सर काटा, और उतनी ही बार उसके धड़ पर एक नया सर प्रकट हुआ । यह देखकर राम को भी आश्चर्य हुआ । उन्होंने दंडकारण्य में विराध को और क्रौंचारण्य में कबंध को मारने के लिए जिन बाणों का प्रयोग किया था, वे बाण भी अब बेकार जा रहे थे । राम इस रहस्य को जान नहीं पा रहे थे ।

राम और रावण के बीच इस प्रकार सात दिन और सात रातें, बिना विश्राम किये, युद्ध चलता रहा ।

राम के बाण रावण के प्रति क्यों कारगर नहीं हो रहे थे, इसका रहस्य मातलि जानता था । वास्तव में रावण की मृत्यु का समय अभी आया नहीं था । रावण की मृत्यु आठवें दिन होनी थी, और यह बात मातलि ही जानता था । इसलिए आठवें दिन उसने राम से कहा, "हे राम । अब समय आ गया है कि रावण का अंत हो । अब आप बिना विलंब किये रावण पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करें । इससे इसका अंत हो जायेगा ।"

मातलि के सुझाव पर राम ने एक भयानक सर्प के आकार का अस्त्र उठाया । वही ब्रह्मास्त्र था जिससे बड़ा तेज प्रकट हो रहा था । ब्रह्मा ने एक बार इंद्र के लिए इसका

सृजन किया था। वह काफी भारी था और उस में पर भी थे। वज्र समान ठोस आयुधों को भी वह ध्वस्त कर सकता था। उस अतिशक्तिशाली महास्त्र को वेदमंत्रों से सिद्ध करके राम ने उसे धनुष पर चढ़ाया और फिर रावण पर छोड़ दिया। वह अस्त्र रावण के वक्ष को चीरता हुआ उसके प्राण ले उड़ा। रावण दूसरे ही क्षण अपने रथ से नीचे गिरकर भूमि पर लुढ़क गया। उसके धनुष-बाण भी एक ओर गिर गये। उधर अपने राजा की मृत्यु पर राक्षसों का मनोबल पूरी तरह जाता रहा और वे युद्ध-भूमि छोड़कर वहां से लंका की ओर भाग निकले। वानरों ने जय-जयकार किया और वे पेड़ और पत्थर लेकर राक्षसों के पीछे भागे।

रावण की मृत्यु के साथ ही देव दुंदुभियां बज उठीं। आकाश से पुष्प वर्षा होने लगी। वानरों के साथ-साथ देव, गंधर्व, यक्ष और किन्नेर इत्यादि भी राम की स्तुति करने लगे। सुग्रीव और अंगद बहुत खुश थे। विभीषण और वानर वीर राम और लक्ष्मण की प्रशंसा करते अघाते न थे।

अपने बड़े भाई की मृत्यु से विभीषण का मन दुखी हुआ। सीता का अपहरण करके अपने दुष्कर्मों के कारण ही रावण को ऐसी मृत्यु मिली थी, वरना वह एक महापुरुष था, पंडित था, परम निष्ठावान था, पराक्रमी था और महान तपस्वी था।

विभीषण को दुखी देखकर राम ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, "रावण कायरों की तरह नहीं मरा। उसने वीरगति पायी है। महान से भी महान योद्धा की भी मृत्यु अवश्यंभावी है। ऐसे हुतात्मा के लिए उसके बंधु-बांधवों को दुखी नहीं होना चाहिए।"

राम से सांत्वना के वचन पाकर विभीषण के मन को शांति मिली। उसने राम से अनुमति ली और अपने बड़े भाई के शास्त्रानुसार दाह-संस्कार करने की व्यवस्था में जुट गया।

रावण की मृत्यु का समाचार पाकर रावण की पत्नियां अंत:पुर से बाहर आयीं और उत्तर द्वार से होती हुई युद्ध-भूमि में

पहुंचीं। फिर वे रावण के मृत शरीर पर गिर कर बुरी तरह से विलाप करने लगीं। मंदोदरी का रुदन तो हृदय-विदारक था। उसके मुंह से निकला, "तीनों लोकों पर विजय पानेवाले और देवताओं को अपने अधीन करनेवाले परमयोद्धा की यह गति, और फिर एक साधारण मानव के हाथों! हे नाथ, मैं ने यह कभी नहीं सोचा था कि मुझे यह क्षण भी देखने को मिलेगा।"

इस पर राम विभीषण से बोले, "विभीषण, अतिशीघ्र इन विलाप कर रही स्त्रियों को अंतःपुर में वापस भिजवा दो और अपने भाई की अंतिम क्रिया की व्यवस्था करो।"

विभीषण के मन में एक प्रकार की दुविधा उठी। माना कि उसका भाई एक परम ज्ञानी और तपस्वी पप्रकृति का था, लेकिन उसने परायी स्त्री का अपहरण करके परम नीचता भी तो दिखायी थी! ऐसे अधम के मृत शरीर को क्या स्वयं अग्नि देना धर्मसम्मत होगा? इससे क्या वह स्वयं अधर्मी नहीं कहलायेगा?

अपने मन के संदेह को जब उसने राम पर प्रकट किया, तब राम बोले, "रावण के दूसरे सद्गुणों की हमें अवहेलना नहीं करनी चाहिए। वह पूरे सम्मान का अधिकारी है। इसलिए ये सारे संस्कार तुम अपने हाथों ही करोगे। चलो, इसमें देर मत करो"

ब्राह्मणों ने चंदन की लकड़ियों से चिता तैयार की, उस पर एक बहुमूल्य बिछावन बिछाया गया और फिर उस पर रावण का मृत शरीर रखा गया। आखिर, मंत्रोच्चारण के साथ उस चिता को अग्नि दे दी गयी। इसके बाद सबने स्नान किया, और रावण की पत्नियों को लंका में वापस भिजवा दिया गया। यह रस्म पूरी हो जाने के बाद विभीषण फिर राम के पास लौट आया।
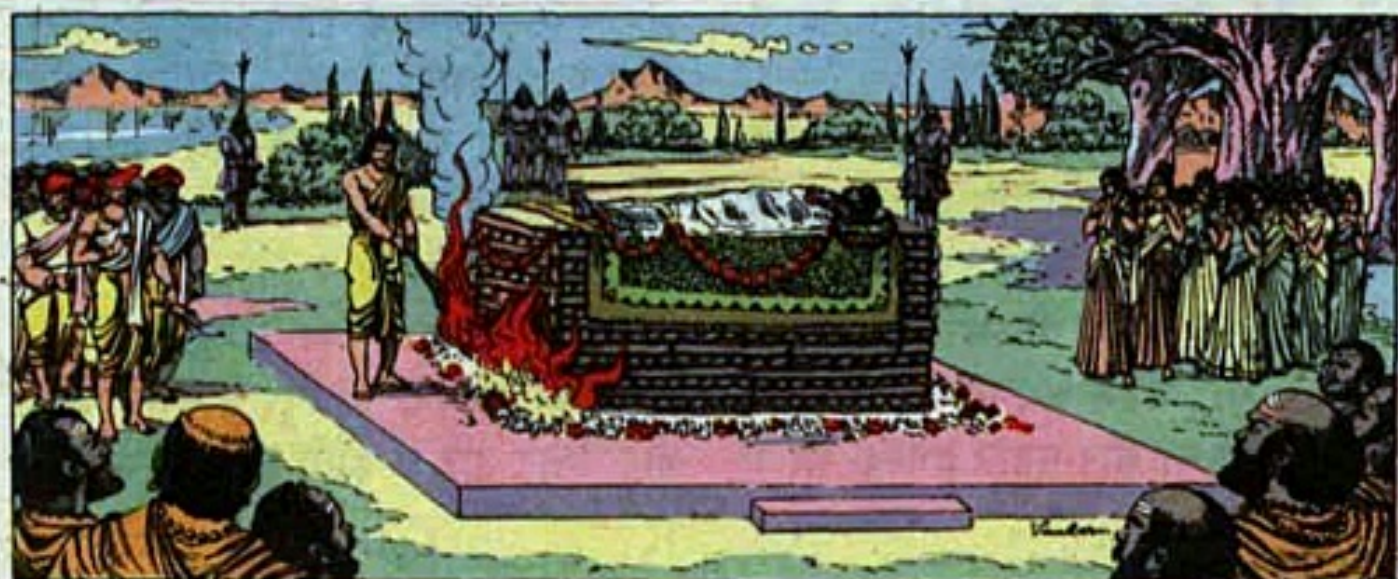
दो मित्र

अरविंदपुर गांव में अतुल नामक एक युवक रहता था। अभी उसकी आयु मुश्किल से बीस वर्ष की हुई थी कि उसने अनेक विद्याएं सीख ली थीं।

एक दिन उसके पिता ने उसे थोड़ा धन देकर कहा, "बेटो, तुम शहर में जाओ और अपनी प्रतिभा के बल पर ढेर सारा पैसा कमाकर लाओ।"

अतुल पिता का आशीर्वाद लेकर शहर के लिए निकल पड़ा। रास्ते में जंगल पड़ता था। वह वहां एक पेड़ के नीचे रुककर आराम करने लगा।

अभी उसे वहां बैठे थोड़ी ही देर हुई थी कि उसी की उम्र का एक और युवक वहां आ पहुंचा। बातों-बातों में उसे पता चला कि उस युवक का नाम अब्दुल्ला है, और उसने भी कई विद्याएं ग्रहण की हैं। दूसरे, वह भी शहर में अपने पिता की आज्ञा से पैसा कमाने जा रहा था।

कुछ ही देर में अतुल और अब्दुल्ला में दोस्ती हो गयी, और दोनों ने तय किया कि वे शहर में मिलकर रहेंगे और आपस में कभी जुदा नहीं होंगे। यानी, दोनों मित्र बने एक दूसरे को बहुत पसंद करने लगे।

वे अभी आपस में बातें कर ही रहे थे कि उन्हें जंगली लोगों ने आ घेरा। उनके सरदार ने कहा, "हम देवी पर नर-बलि चढ़ाना चाहते हैं, और उसके लिए हमें एक आदमी की खोज है। हमें, बस, एक ही आदमी चाहिए। अब तुम दोनों आपस में तय कर लो कि तुम में से कौन हमारे साथ आयेगा, वरना हम तुम दोनों को अपने साथ ले चलेंगे।

दोनों मित्र ईश्वर को मानने वाले थे और दोनों का नेकी में विश्वास था। उन्होंने आपस में बात की और फिर अतुल अब्दुल्ला

से बोला, "मैं तुम्हें खतरे में छोड़कर कैसे जा सकता हूं । मेरा भगवान मुझे कभी क्षमा नहीं करेगा । इसलिए सारी ज़िम्मेदारी अपने भगवान पर छोड़कर मैं इनके साथ जाना चाहता हूं ताकि हम दोनों ही इस खतरे को न उठायें ।"

इस पर अब्दुल्ला तुनककर बोला, "मैं खुदगर्ज़ बनूंगा तो खुदा मुझे हरगिज़ माफ नहीं करेगा । इसलिए तुम शहर जाओ, मैं इनके साथ जाऊंगा ।"

इसी बात को लेकर दोनों मित्रों में आपस में बहस छिड़ गयी और ऐसे ही काफी समय निकल गया । इससे उन जंगली लोगों का सरदार बड़ा उतावला हो उठा और कहने लगा, "अब तुम कब तक इंतज़ार करवाते रहोगे? हमें देर हो रही है ।"

"तुम लोगों के साथ मैं चलूंगा । इसलिए इसे समझाओ," अब्दुल्ला ने कहा ।

"नहीं, तुम लोगों के साथ मैं चलूंगा । समझाना है तो इसे समझाओ ।" अतुल ने कहा ।

यह देखकर उन जंगली लोगों का सरदार हैरत में पड़ गया । उसने कहा, "तुम्हारे जैसे लोग तो विरले ही होंगे । हमारे पास इस समस्या का हल है । अभी हम एक को बलि चढ़ा देते हैं और छह महीने के बाद पूनो की रात को दूसरे को बलि चढ़ा देंगे । यह कहते हुए उन दोनों युवकों को अपनी बस्ती में ले गये ।

वहां पहुंचते ही अब्दुल्ला ने कुछ सोचते हुए अतुल से पूछा, "अगर एक आदमी दूसरे आदमी को देवी पर बलि चढ़ाता है तो क्या देवी इससे प्रसन्न होगी?"

"यह इन लोगों का अज्ञान है ।" अतुल ने कहा ।

अगले दिन जब उन जंगली लोगों का सरदार उनके पास आया तो वे बोले, "पूनम की रात में अभी दस रोज़ बाकी हैं । ऐसी हुत सी बातें हैं जो तु लोग नहीं जानते । हम तुम्हें वह सब सिखा सकते हैं ।" इस बीच युवकों के इस सुझाव को सरदार ने मान लिया ।

अब अतुल और अब्दुल्ला उन्हें नीति कथाएं सुनाने लगे ।

उन दोनों मित्रों से ये सब कहानियां

सुन-सुनकर उन लोगों में काफी परिवर्तन आने लगा। वहां की एक युवती अतुल से प्यार करने लगी, और एक दूसरी लड़की अब्दुल्ला पर फिदा हो गयी। वे दोनों लड़कियां उन दोनों मित्रों से अलग-अलग मिलकर बोलीं, "वचन दो कि तुम मुझ से शादी करोगे। मैं तुम्हें गुप्त मार्ग से यहां से निकाल ले चलूंगी।"

लेकिन इन दोनों मित्रों में से पहले कोई भी जाना नहीं चाहता था। उन्होंने उस बस्ती के सरदार को लड़कियों की बात बता दी। सरदार इन दोनों मित्रों की ईमानदारी पर खुश होकर बोला, "तुम दोनों से मुझे अच्छे रहन-सहन के बारे में पता चला। लेकिन मुझे डर है कि अगर देवी को क्रोध आ गया तो कबीले को नष्ट कर देगी।"

"पर नरबलि को तो कोई भी देवी पसंद नहीं करती।" अब्दुल्ला ने कहा।

"मुझे इसका प्रमाण चाहिए कि नरबलि न करने से देवी नाराज़ नहीं होगी।" सरदार ने कहा और इसके साथ ही वह वहां से चला गया।

अतुल और अब्दुल्ला काफी देर तक सोचते रहे। फिर उन्हें एक युक्ति सूझी। अगले दिन जब उस कबीले का सरदार उनके पास आया तो अतुल ने कहा, "पूनम की रात को तुम मुझे देवी पर बलि चढ़ाने के लिए ले चलो। मेरा यह मित्र तुम्हें एक तलवार देगा। अगर देवी को मेरी बलि स्वीकार हुई तो वह तलवार काम करेगी, वरना वह मुझे मारने में असमर्थ रहेगी।"

अतुल का यह सुझाव सरदार को अद्‌भुत लगा। उसने कहा, "अगर यह तलवार सचमुच तुम्हारा वध न कर सकी तो मैं मान लूंगा कि देवी को नरबलि पसंद नहीं।"

इस बीच अब्दुल्ला ने सरदार से एक तलवार ली और उस पर इस कदर चुंबक रगड़ा कि तलवार में भी चुंबक का गुण आ गया। इसी प्रकार एक लोहे की तार को भी चुंबक से रगड़-रगड़ कर चुंबक में बदल दिया गया। फिर उस लोहे की तार को अतुल के गले में लपेटा गया और कई बार प्रयोग करके यह निश्चित कर लिया गया कि यह तलवार अतुल के गले के पास आते ही विकर्षण के कारण पीछे हट जाती है।

पूनम की रात आयी। अतुल बलि चढ़ने के लिए तैयार हो गया। सब कुछ वैसे ही हुआ जैसे कि उन मित्रों ने सोचा था। कबीले का सरदार जैसे ही बलि वाली तलवार को अतुल के गले के निकट लाता, विकर्षण के कारण वह तलवार पीछे हट जाती। इससे कबीले के सारे लोग अचंभें में पड़ गये। उन्हें विश्वास होने लगा कि देवी को नर-बलि मंजूर नहीं।

तीन बार कोशिश की गयी और तीनों बार ऐसा ही हुआ। आखिर, सरदार ने बलि की तलवार को परे फेंक दिया और अतुल को बलि की वेदी से उतार कर उन दोनों मित्रों के पांवों पर गिरते हुए उनसे बोला, "तुम दोनों तो सचमुच महान हो। हमारी देवी के मन को हमसे ज़्यादा तो तुम जानते हो। अब तो तुमने हम सब को इसका सबूत भी दे दिया। हम नरबलि छोड़ देंगे और सभ्य नागरिक बनकर जीना चाहेंगे। किंतु हमारे सामने एक समस्या है। हमारे पास धन नहीं है। बिना धन के हम तुम लोगों के बीच जाकर कैसे रह सकते हैं? हमारा एक उपकार करो। यहां पास ही एक पहाड़ी गुफा है। उस गुफा में एक राक्षस रहता है। हमने कभी उसे देखा तो नहीं, लेकिन हमारे लोगों का कहना है कि उसके पास ढेर सारा सोना औ उतना ही धन है। उस गुफा में अगर कोई जाता भी है तो वह ज़िंदा नहीं लौटता। हमें अब विश्वास हो गया है कि तुम दोनों वहां जा सकते हो। इसलिए तुम वहां जाओ और वहां से धन-दौलत लाकर हमारी मदद करो।"

उन दोनों मित्रों ने सरदार को वचन दिया कि वे उसके कबीले के लिए धन-दौलत लेकर ही लौटेंगे। लेकिन उस गुफा में एक बार एक ही मित्र जाना चाहता था, ताकि दूसरा बाहर रहकर गुफा के भीतर जानेवाले मित्र की रक्षा कर सके। जब यह उन्हें संभव न दिखा तो उन्होंने एक साथ ही उस गुफा में प्रवेश करने का निश्चय किया।

कबीले का सरदार उन्हें पहाड़ी गुफा के पास छोड़ आया। गुफा में घुप अंधेरा था। दोनों मित्र धैर्य के साथ आगे बढ़ते रहे। उन्हें अंधों की तरह अपना रास्ता टटोलना पड़ा। अचानक उनके सामने बिजली की चमक हुई और इसके साथ ही उनके

सामने एक सुंदर युवती आ खड़ी हुई ।

वह सुंदर युवती अतुल से बोली, "जो भी मुझे देखेगा, उसे जिंदा रहने के लिए मुझसे शादी करनी होगी । तुम काफी सुंदर हो । इसीलिए मैं तुम्हारे सामने आयी हूं । चलो हम शादी कर लें ।"

"तब मेरे इस दोस्त का क्या होगा?" अतुल ने सुंदरी से पूछा ।

इस पर वह युवती हंसी और देखते ही देखते अब्दुल्ला राख का ढेर बन गया । अतुल यह देखकर परेशान हो गया और रोते हुए उस ढेर के पास बैठ गया । फिर वह सुंदरी से बोला, "तुम निर्दयी हो । मैं तुमसे शादी नहीं कर सकता । मुझे भी राख कर दो ।"

"मैंने तुममें आशा जगाकर तुम दोनों को अलग करना चाहा । लेकिन यह संभव न हुआ । तुम दोनों की दोस्ती लाजवाब है । तुम्हारा यह मित्र थोड़ी ही देर में जीवित हो जायेगा । आगे बढ़ जाओ । तुम दोनों की भलाई ही होगी ।" और यह कहकर वह सुंदरी अदृश्य हो गयी ।

थोड़ी ही देर में वह राख का ढेर गायब होने लगा और उसकी जगह वहां से अब्दुल्ला प्रकट होने लगा । अब्दुल्ला जब सही-सलामत सामने खड़ा दिखाई दिया तो उसे उसने वह सब बता दिया जो उसके साथ घटित हुआ था । फिर वह बोला, "जो भगवान पर विश्वास करते हैं, उन्हें कभी कोई हानि नहीं पहुंचा सकता ।"

वे दोनों मित्र अब थोड़ा आगे बढ़े । आगे बढ़ने पर उन्हें एक ऐसा व्यक्ति दिखाई दिया जो लंबा और पतला था । उन्हें देखकर वह व्यक्ति अजीब ढंग से हंसने लगा और कहने लगा, "तुम दोनों गाओ । खूब बढ़िया गाओ । जो मुझे पसंद हुआ, उसे मैं ख़ज़ाना दिखा दूंगा । लेकिन जो मुझे पसंद नहीं होगा, उसका मैं अंत कर दूंगा ।"

दोनों मित्रों ने अपना-अपना गला साफ किया और फिर स्वर साध कर गाने लगे । उनके गाने सुनकर वह व्यक्ति खुशी से झूम उठा और नाचने लगा । फिर जैसे ही गाना खत्म हुआ, अतुल पीछे की ओर लुढ़का और गिर पड़ा । यह देखकर अब्दुल्ला नेअपनी छाती पीटनी शुरू कर दी और कहने लगा "अगर मेरा दोस्त ज़िंदा न रहा तो मैं भी

ख़ज़ाना?" उस व्यक्ति ने कहा ।

अब्दुल्ला ने झट से उत्तर दिया, "मुझे मेरा दोस्त चाहिए ।"

अगले ही क्षण वह भवन, वह संपत्ति और वह दुबला-पतला आदमी सब ग़ायब हो गये और वहां अब्दुल्ला को अपने सामने अपना मित्र खड़ा दिखाई दिया ।

जो कुछ बीता था, उसके बारे में सुनकर अतुल ने कहा, "फिर यह साबित हो गया कि जो भगवान् पर भरोसा करता है, उसका कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता ।"

अब दोनों मित्र खुशी-खुशी आगे बढ़े । लेकिन उन्हें यह सोचकर कौतूहल हो रहा था कि देखें कि अब क्या घटता है । वह कुछ ही आगे बढ़े थे कि उन्हें पर्वत जैसा एक विशालकाय राक्षस दिखाई दिया । राक्षस ने अतुल और अब्दुल्ला की तरफ प्यार से देखते हुए कहा, "तुम दोनों की दोस्ती महान है । तुम में से एक ने नारी सौंदर्य पर विजय पायी, तो दूसरे ने धन-वैभव को ठुकरा दिया । बहुत सोचने पर भी मैं यह फैसला नहीं कर पा रहा कि तुम दोनों में महान कौन है । यह फैसला अब तुम दोनों खुद ही करो और मुझे बताओ कि मैं किसे महान मानूं ।"

"पर तुम कौन हो? और यह जानकर कि हम में से कौन महान है, तुम्हें क्या लाभ होगा?" अतुल ने धैर्य के साथ पूछा ।

"मुझे पर्वत राक्षस कहते हैं । इस गुफा का मैं ही मालिक हूं । जब यह निश्चित हो जायेगा कि तुम दोनों में से कौन महान

ज़िंदा न रहूंगा । फौरन बताओ कि मेरा दोस्त कैसे मुझे ज़िंदा वापस मिलेगा?"

वह दुबला-पतला व्यक्ति कुछ नहीं बोला । उसने अब्दुल्ला को अपने साथ लिया और आगे बढ़ गया । आगे बढ़ने पर अब्दुल्ला ने देखा कि वहां एक बहुत बड़ा भवन है । उस भवन में हर कहीं सोना, और गहने दीख रहे थे । इतना सोना देखकर अब्दुल्ला की आंखें चकाचौंध हो गयीं ।

"यह समूचा खज़ाना अब तुम्हारा हो गया । अगर अब भी तुम अपने दोस्त को ज़िंदा देखना चाहते हो, तो वह ज़िंदा तो हो जायेगा, लेकिन दूसरे ही क्षण यह खजाना ग़ायब हो जायेगा । अच्छी तरह सोच लो और बताओ कि तुम्हें दोस्त चाहिए या यह

है, तो मैं उसका विवाह यहां की सर्वाधिक सुंदरी से कर दूंगा, और यहां का सारा धन उसे दहेज के रूप में दे दूंगा। पर दूसरे को मैं ज़िंदा जलाकर खा जाऊंगा और फिर पाताल में चला जाऊंगा।" राक्षस ने कहा।

दोनों मित्र एक तरफ हट गये और आपस में बातचीत करने लगे। आखिर उनकी समझ में आ गया कि साम, दान से तो उन पर काबू नहीं पाया जा सका, अब यह राक्षस उनमें भेद भाव पैदा करके उनकी मित्रता परखना चाहता है।

लेकिन अब भी उसे मुंह की खानी पड़ेगी, उन्होंने निश्चय किया। फिर उन्होंने एकाएक कहा, "इस दुनिया में सब बराबर हैं। कोई न बड़ा है, न छोटा है। कोई महान भी नहीं है। महान तो केवल भगवान है। भगवान् से आज्ञा लेकर अपनी गुफा सुंदरी का विवाह यहां के कबीले के सरादर से कर दो और अपनी संपत्ति उसे दहेज में दे दो। हम दोनों को शहर जाना है। इसलिए हमें शहर के रास्ते पर पहुंचा दो।"

दोनों मित्रों का यह कहना था कि उनकी आंखें चौंधिया गयीं। उन्हें पता तक न चला कि उनके साथ क्या बीता है। उनकी जब आंखे खुलीं तो उन्होंने देखा कि वे शहर के छोर पर खड़ें हैं। उन्होंने अब मन ही मन प्रार्थना की कि अब कोई बाधा उनके मार्ग में न आये।

वे दोनों मित्र कुछ और आगे गये। अब उन्हें रास्ते के एक तरफ एक मंदिर दिखाई दिया और दूसीर तरफ एक मस्जिद। दोनों खुश थे कि उन्हें अपने-अपने ईश्वर की वंदना करने का अवसर मिल गया है।

अतुल अब मंदिर की ओर चला गय और अब्दुल्ला मस्जिद की ओर। लेकिन कुछ ही कदम आगे बढ़ने पर उनके मन में एकसाथ एक विचार आया और वे पीछे हटते हुए बोले, "अरे, हम तो एक दूसरे से अलग हो रहे हैं।"

ईश्वर ने दोनों की चिंता को समझा और उन्हें आशीर्वाद दिया, तुम मेरे नाम पर भविष्य में कभी अलग नहीं होंगे।

कमीना सूदखोर

एक गांव में एक सूदखोर रहता था। उसका पैसे का ही लेन-देन था। वह था बड़ा दुष्ट। बेशक भूत-प्रेतों से साधारण लोग भय खाते हैं, लेकिन उस जैसे दुष्टों को भय नहीं लगता।

इस सूदखोर ने इसी गांव की एक गरीब औरत को कुछ कर्ज़ दिया था। उस औरत के छह बच्चे थे। उसके पति का अचानक देहांत हो गया था। जब वह अपने बच्चों को उनकी भूख मिटाने के लिए चावल का मांड भी न दे पायी तो उसे मजबूर होकर इस सूदखोर से तीस रुपये का कर्ज़ लेना पड़ा और, अपना घर गिरवी रखना पड़ा।

दूसरे वर्ष भी वह वह उस कर्ज़ को चुका न पायी, बल्कि पंद्रह रुपये उसे और कर्ज़ लेना पड़ा। सूदखोर ने उन कर्जों का ब्याज़ लगाया, और फिर ब्याज़ पर भी ब्याज लगाया। इस तरह कर्ज़ की रकम सौ हो गयी।

उस औरत के घर की कीमत सौ रुपये से काफी ज्यादा पड़ती थी, लेकिन सूदखोर तो दुष्ट प्रकृति का था न। उसने उसे डरा-धमकाकर कर्ज़ के एवज़ में वह घर ही हड़पना चाहा।

एक दिन वह सुबह-सुबह अपने घर से इसी विचार से निकला। उसी समय उसे रास्ते में एक पिशाच दिखाई दिया।

"क्यों, किधर जा रहे हो? क्या यहां किसी का ऊपर से बुलावा आ गया है?" सूदखोर ने उस पिशाच से प्रश्न किया।

इस पर पिशाच हंस दिया, "इस गांव में मेरा आगमन काफी दिनों के बाद हुआ है। यहां कहीं भोजन करना जरूर चाहता हूं। पर तुम कहां जा रहे हो?"

सूदखोर ने उसे बताया कि वह एक औरत के घर पर कब्ज़ा करने जा रहा है। फिर उसने उसे यह भी बताया

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

कि उस औरत ने कितना कर्ज़ लिया था, और उस रकम पर कितना ब्याज बना, और उस औरत ने कर्ज़ की रकम चुनाने में कैसे कोताही की ।

"बाप रे, बाप! अब दो साल भी नहीं बीते और ब्याज की रकम असल से भी ज्यादा हो गयी । तुम मानव हमें बेकार में भला-बुरा कहते हो । तुम में तो एक से एक बढ़कर अफलातूनी है ।" पिशाच ने कहा ।

पिशाच की बात पर सूदखोर को ज़रा भी गुस्सा नहीं आया ।

ऐसे ही वे दोनों आपस में बातें करते हुए आगे बढ़ गये । तभी उन्होंने सुना कि कोई औरत अपनी झोंपड़ी में अपने बेटे पर गुस्सा उतार रही है, "अरे, आलसी टट्टू, तुम्हें तो कोई पिशाच ही निगल लेता तो अच्छा होता । मैं ने कहा था न कि किवाड़ बंद कर लो । तुमने वह भी न किया । अब देखो, बिल्ली सारा दूध चट कर गयी है ।"

सूदखोर के कानों में जब यह बात पड़ी तो उसने पिशाच से कहा । "लो, तुम्हारे भोजन का तो इंतज़ाम हो गया । वह औरत चाह रही है कि तुम उसके बेटे को निगल जाओ! जाओ, अपनी भूख मिटाओ ।"

पिशाच एक बार फिर हंसा और बोला, "तुम तो वाकई अद्भुत हो । क्या मैं इतनी छोटी सी बात भी नहीं समझता? वह तो केवल अपने बेटे को डरा रही है । उसे भोजन के रूप में मेरे हवाले नहीं करना चाहती ।"

अब वे दोनों कुछ और आगे बढ़े । एक जगह पति और पत्नी आपस में झगड़ रहे थे । "तुम्हारे जैसी झगड़ालू औरत को
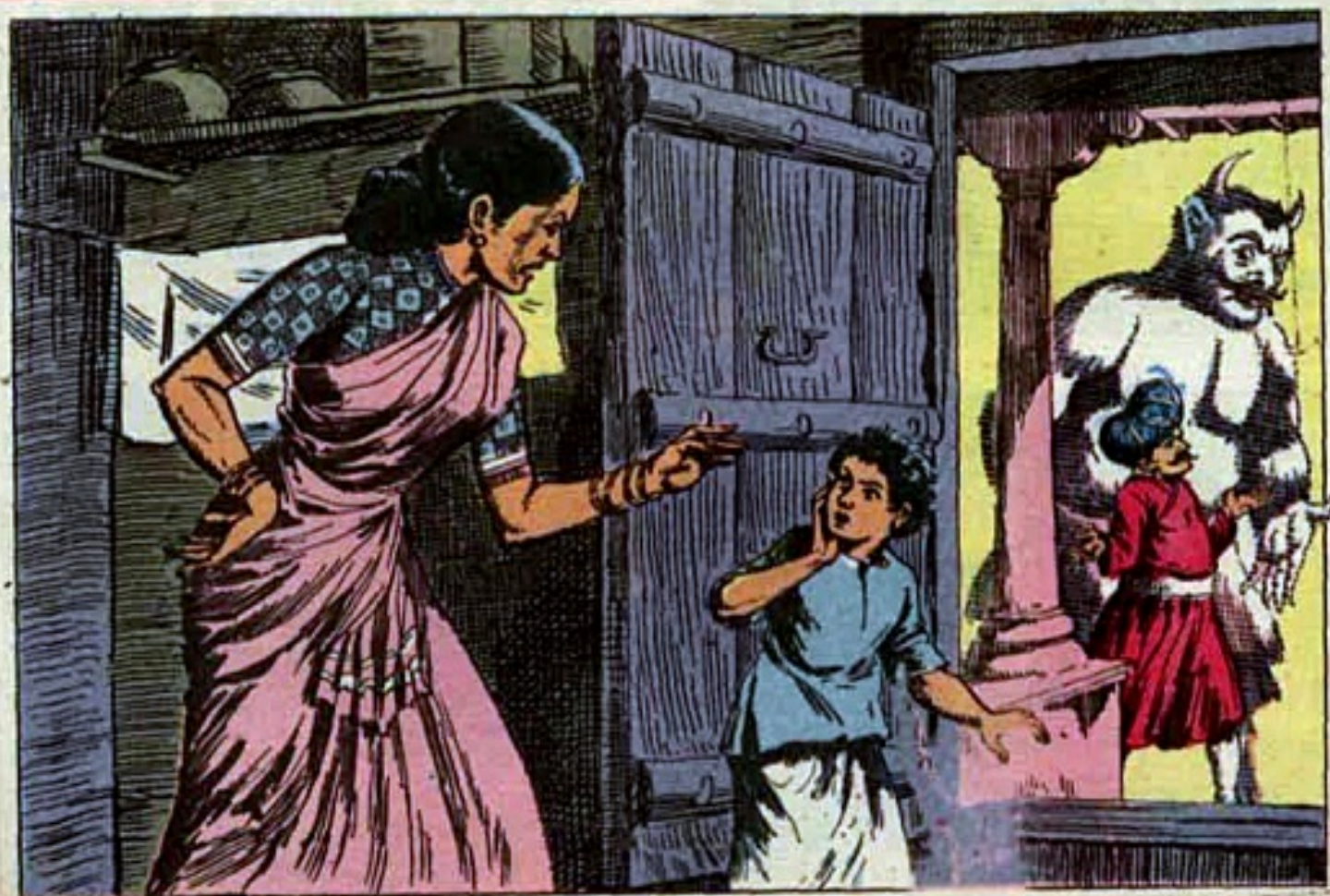
पिशाच खा जाता तो अच्छा होता ।"

सूदखोर को कहने के लिए फिर एक बात मिली । बोला, "अब इस मौके को हाथ से मत जाने दो । चाहो तो दोनों को एकसाथ खा सकते हो ।"

लेकिन पिशाच ने फिर उसकी बात काट दी । कहने लगा, "वे तो सिर्फ एक दूसरे को गालियां दे रहे हैं । क्या मैं असली बात नहीं समझता? शायद तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आयी ।"

वे आगे बढ़े । कुछ दूर चलने के बाद उसी गरीब औरत का घर आ गया । सूदखोर ने जब उसका किवाड़ खटखटाया तो वह एकदम से बाहर आयी और बोली, "क्या बात है बेटा?"

सूदखोर तो बेशर्म था ही । झट से बोला, "कुछ नहीं, अम्मा । तुम्हारे कर्ज़ की रकम वैसे की वैसी बनी हुई है । ब्याज़-दर-ब्याज चढ़ता जा रहा है । असल और ब्याज मिलाकर अब सौ रुपये हो गये हैं । दो सालों में तुमने एक दमड़ी भी नहीं चुकायी । पर चुकाओगी भी कैसे? चलो, कर्ज़ की अदायगी में तुम अपना यह घर मुझे दे दो । बस, हिसाब बराबर हो जायेगा । चलो, अब यह घर तुरंत खाली करो और इसे मेरे हवाले कर दो ।"

सूदखोर की बात सुनकर वह औरत गुस्से से तमतमा गयी और उसी गुस्से में बोली, "अरे बेहया, तुम्हें तो रत्ती-भर भी शर्म नहीं । तुम जैसों को तो अगर पिशाच खा जाये तो मुझे बड़ा चैन मिले । पैंतालीस रुपये देकर मेरा घर ही खा जाना चाहते हो? पापी कहीं के!"

इतना कहकर वह झाड़ू लेने भीतर गयी ताकि वह सूदखोर को सबक सिखा सके । लेकिन जब तक वह झाड़ू लेकर बाहर आयी, उसने देखा कि सूदखोर वहां से ग़ायब है । उसे हैरानी हुई । "कमीना डर के मारे भाग गया होगा ।" उसने सोचा ।

लेकिन दरअसल, उस कमीने सूदखोर को पिशाच ने औरत की बात सच रखने के लिए निगल लिया था ।

प्रकृति: रूप अनेक
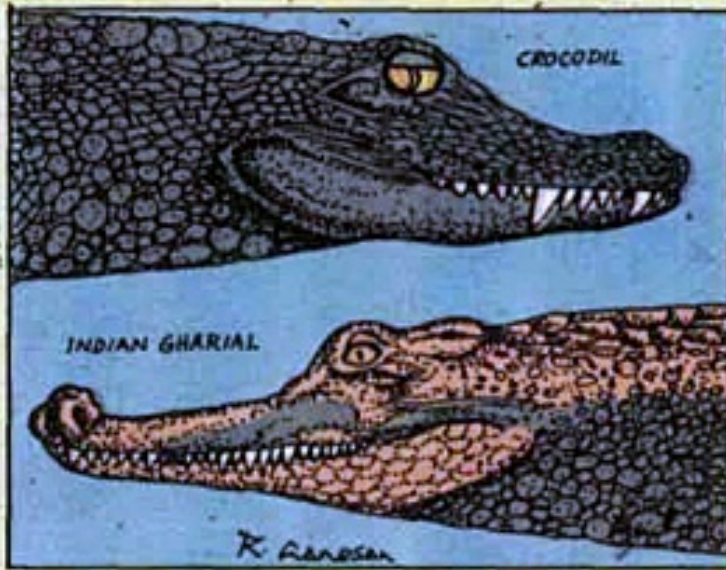
गरजने वाले बाघ से डरो नहीं

अगर तुम्हें चलते-चलते, कहीं रास्ते में बाघ मिल जाये तो हो सकता है मारे भय के तुम्हारे हाथ-पांव फूल जायें। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि तुम वहां से भग खड़े हो। बाघ की तरफ जरा ध्यान से देखो (यानी, अगर तुम्हारी हिम्मत ने तुम्हारा साथ नहीं छोड़ा है तो) अगर तुम्हें इसके कान आगे को झुके हुए खड़े मिलें और उनके भीतर के सफेद चकत्तो भी दिखें तो समझ लो कि यह अब हमला करने ही वाला है। उस समय तुम्हें तत्काल वहीं कहीं छिप जाना चाहिए। लेकिन अगर उसके कान खड़े नहीं हैं तो तुम यह समझो कि यह खुद अपना बचाव चाहता है। उस समय यह अपने दांत दिखाते हुए गरज सकता है। लेकिन डरने की कोई बात नहीं। बस, आराम से वहां से हट जाओ। याद रखो भौंकने वाला कुत्ता कम ही काटता है, और गरजता बाघ भी बहुत कम ही झपटता है।

डायनोसॉर के मौसेरे भाई-बहन

मगरमच्छ डायनोसार का सब से नज़दीकी रिश्तेदार है। यह आम तौर पर झीलों, नदियों और दलदल में पाया जाता है। इसके दो परिवार हैं। एक परिवार में क्रॉकोडाइल, ऐलिगेटर और केमैन हैं। इस परिवार को 'क्रॉकोडाइल डी' कहा जाता है। दूसरा परिवार 'गेवियालि डी' है। भारतीय घड़ियाल इसी परिवार से है। लेकिन दोनों परिवारों के सदस्यों की आदतें एक सी हैं। केवल बाहरी आकार में ही अंतर है। क्रॉकोडाइल के निचले जबड़े में चौथा दांत काफी बड़ा होता है और बाहर निकला होता है। घड़ियाल की थूथनी लंबी और पतली होती है और दांत बाहर नहीं दिखते। इसका शरीर तो पानी में रहता है, लेकिन थूथनी सांस लेने के लिए बाहर निकली रहती है।
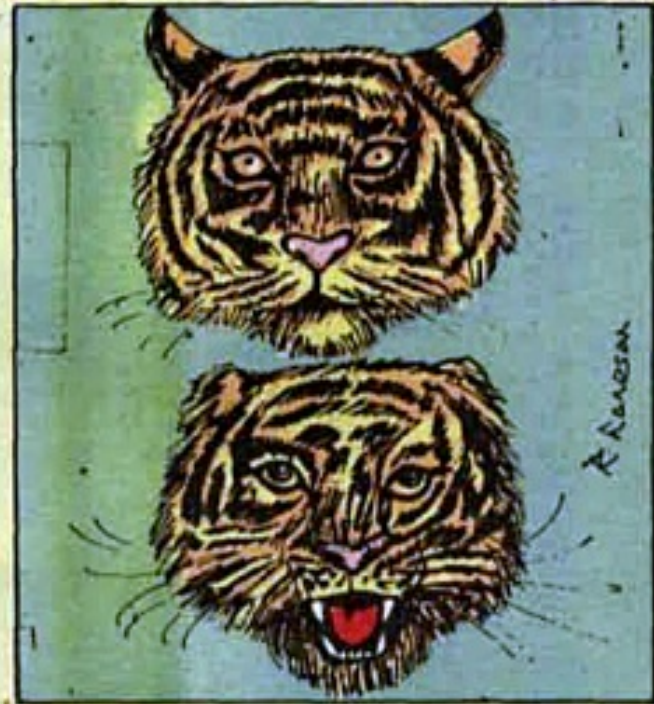
एक बहुत पुराना पेड़

१९१२ में कोयंबतूर में कृषि महाविद्यालय खोलने के लिए एक भूखंड अधिगृहीत किया गया। वहां आम का एक पेड़ था जिसे ५० वर्ष पुराना समझा जाता था। वह पेड़ अब भी वहां मौजूद है और फल भी दे रहा है। हर साल इससे प्रायः २००० आम प्राप्त होते हैं। एक आम का वज़न लगभग २५० ग्राम होता है। आम के पेड़ की उम्र आम तौर पर ५० साल मानी जाती है। लेकिन कोयंबतूर के इस असाधारण पेड़ की उम्र इस समय १४० वर्ष होगी। भारत में संभवतया यह आम के सबसे पुराने पेड़ों में से है। नेडुनचालई किस्म के इस पेड़ के तने का घेरा १४ फुट है, और इसकी शाखाओं की लंबाई ४० फुट तक है। इन शाखाओं को अपने ही बोझ से टूटकर गिरने से बचाने के लिए नीचे से काफी सहारा दिया गया है।

From Wobbit,
We think you
'Cause it's thanks
We celebrate

and all the rest
re the very best
YOU from today
mama's 3rd B'day
Thanks to all of you. From all of us here at Chandamamma. Thanks for having shared all those happy times with us. And we hope you have many more.
Thanks to all you Moms, Dads, Grandmoms and Grandads too. For giving us homes with such great friends. And all that warmth and affection.
Thanks to all our distributors and dealers. For all the help and support. Here's to even better times ahead !
This is just the beginning. Watch out for the surprises we have in store for you next year. Like the new range of Chandamama Soft Toys. And much more ! Because, at Chandamama, the party goes on all year through !
THE
CHANDAMAMA
COLLECTION

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां जुलाई, १९९३ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

M. Natarajan

Devidas Kasbekar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ १० मई'९३ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.**

मार्च १९९३, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **जहां प्यार की हो बरसात!**

दूसरा फोटो : **वहां न कोई भय की बात!!**

प्रेषक : नोहरसिंह पटेल, मानिकपुर, जिला रायगढ़ (म.प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. १००/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी ।

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

CHANDAMAMA (Hindi)
May 1993
Regd. No. M. 5452
FREE!
BUNNY TEETH
INSIDE EVERY 100 GMS
POUCH OF COOKIES
मिठाई में
नारियल
मुँह में
हलचल
nutrine
COOKIES
बच्चे झूमें-गायें, मौज मनायें
कोकानाका कुकीज